04 - 'स्वर कोकिला' लता मंगेशकर

05 - कला, विंसेंट वॉन गॉग और संघर्ष की दास्तान

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 28 अगस्त, 2025

06 - टाइगर ऑफ स्काई की गौरवपूर्ण विदाई

07 - किताबों में छुपे कथानकों को कौन ढूंढेगा!

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 344, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

बादलों की धींगा मस्ती...

राजस्थानी कर राजसमंद झील इनदिनों ऐसे ही मनोरम दृश्यों की गवाह है। फोटो: पंकज शर्मा

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

कांग्रेस अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रही है

● मोदी बोले-हमने टैक्स घटाया, वो अब भी लूट में लगे

2जी के दौर को वह भूल गए, जब चुटकुले बनते थे

भुवनेश्वर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को ओडिशा के झारसुगुड़ा पहुंचे। उन्होंने जनता को करीब 38 मिनट तक संबोधित किया। इस दौरान पीएम ने आत्मनिर्भर भारत, जीएसटी बचत उत्सव, कांग्रेस शासन में भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर बात की। पीएम ने कहा कि टेलीकॉम सेक्टर की शुरुआत हुई तो भारत पीछे रह गया था। सोशल मीडिया पर चुटकुले चलते थे।

देश को कांग्रेस के लूट तंत्र से बाहर निकाला

हमने देश को कांग्रेस के लूट तंत्र से बाहर निकाला। भाजपा सरकार में डबल बचत और डबल कमाई का दौर आया है। कांग्रेस सरकार में 2 लाख की कमाई तक इनकम टैक्स देना पड़ता था। ये 2014 तक चलाया। जब आपने मुझे सेवा का मौका दिया तब हमने 12 लाख की सालाना कमाई टैक्स फ्री की। 22 सितंबर से देश में ओडिशा में जीएसटी के नए रिफॉर्म लागू हुए। इन सुधारों में आप सभी को जीएसटी बचत उत्सव का उपहार दिया है। माताओं के लिए रसोई चलाना और सस्ता हो गया है। जरूरत के दाम और कम हो गए।

ओडिशा डबल इंजन की रफ्तार से बढ़ रहा

साथियों इस समय नवरात्रि का पर्व चल रहा है। ऐसे दिनों में मुझे मां रामोचंडी की इस भूमि पर आपके दर्शन का सौभाग्य मिला है। यहां माताएं बहने भी आईं हैं। आपका आशीर्वाद ही हमारी शक्ति है। जनता को नमन करता हूं। डेढ़ साल पहले विधानसभा चुनाव में ओडिशा के आप लोगों ने एक नए संकल्प के साथ आगे बढ़ने का प्रण लिया था। ये संकल्प था विकसित ओडिशा, आज हम देख रहे हैं ओडिशा डबल इंजन की रफ्तार से बढ़ रहा है। आज फिर ओडिशा के विकास के लिए देश के विकास के लिए हजारों करोड़ के प्रोजेक्ट शुरू हुए हैं।

विदिशा जिले के कुरवाई में दी 258 करोड़ के विकास कार्यों की सौगातें

गरीब कल्याण और प्रदेश के चहुँमुखी विकास के लिये हो रहे हैं योजनाबद्ध तरीके से कार्य: मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गरीब कल्याण के साथ चहुँमुखी विकास के लिये राज्य सरकार योजनाबद्ध तरीके से कार्य कर रही है। प्रदेशवासियों का जीवन बेहतर बनाने और किसानों की बेहतरी के लिये राशि की कमी नहीं होने दी जायेगी। आज बदलते दौर में भारत और भारत की ताकत को दुनिया देख रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकास के हर क्षेत्र में नए कीर्तिमान बन रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव विदिशा जिले के कुरवाई में शनिवार आयोजित हिनौता सिंचाई परियोजना अंतर्गत जाजपोन पुनर्वास कॉलोनी एवं विभिन्न निर्माण कार्यों के लोकार्पण- शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कुरवाई एवं विदिशा जिले के विकास के लिए 258 करोड रुपए की सौगात दी। मुख्यमंत्री ने 92 करोड़ 70 लाख रुपए की लागत के 46 विकास कार्यों का भूमिपूजन एवं 165 करोड रुपए की लागत के 34 कार्यों का लोकार्पण किया। इसमें 7 करोड़ 36 लाख रुपए की महत्वपूर्ण हिनौता बांध परियोजना भी शामिल है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम स्थल पर प्रदर्शित केन-बेतवा लिंक परियोजना के मॉडल का अवलोकन भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को विदिशा के कुरवाई में हनौता सिंचाई परियोजना के मॉडल का अवलोकन किया। मुख्यमंत्री के आगमन पर नागरिकों और विभिन्न संगठनों ने ऐतिहासिक स्वागत किया। सीएम के पहुँचने पर लाडली बहना सेना ने आत्मीय और हार्दिक अभिनंदन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार किसानों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से चर्चा कर प्रदेश में भावांतर योजना लागू कर दी गई है। इस साल सोयाबीन की फसल की बिक्री पर 5328 रुपए प्रति क्विंटल की राशि मिलेगी। किसानों को अंतर की राशि सरकार देगी, जिसका भुगतान उनके बैंक खातों में 15 दिन के अंदर कर दिया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विदिशा जिले में खराब हुई किसानों की फसलों का सर्वे कराया जाएगा। किसानों को राहत राशि, बीमा आदि का लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि हम किसानों के लिए जो कहते हैं वह करके दिखाते हैं। किसानों को सिंचाई के लिए कोई परेशानी नहीं आने दी जाएगी। केन- बेतवा लिंक परियोजना के माध्यम से सिंचाई और उद्योगों को पानी मिलेगा।

भाई-दूज पर बहनों को मिलेगा विशेष उपहार

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि राज्य सरकार लाड़ली बहना योजना में दीपावली के बाद भाई दूज पर लाड़ली बहनों को 1500 रुपए की राशि देगी। राज्य सरकार बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए भी प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। बच्चों को स्कूटी, निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें, साईकिल, छात्रवृत्ति सहित छात्रावास की सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। प्रदेश में सांदीपनि विद्यालय भी अच्छे बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने सुदामा से दोस्ती निभाकर गरीब -अमीर की मित्रता की शिक्षा दी थी।

स्वदेशी को दें प्रोत्साहन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने हमें स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग करने का मंत्र दिया है, जिसे प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जीएसटी कम करने से कई वस्तुएं सस्ती हुई हैं। प्रदेश में सड़क सुरक्षा सप्ताह मनाया जा रहा है। किसी घायल की जान बचाने के लिए सरकार ने राहवीर योजना में 25 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि देने का निर्णय लिया है। गंभीर रोगियों के उच्च स्तरीय उपचार के लिए प्रदेश में एयरलिफ्ट की सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

सूक्ष्म जगत जो अदृश्य, अव्यक्त है, उसकी सत्ता मां कात्यायनी चलाती है। वह अपने इस रूप में उन सब की सूचक है, जो अदृश्य या समझ के परे है। मां कात्यायनी दिव्यता के अति गुप्त रहस्यों की प्रतीक हैं।

सुप्रभात

मैं चला
न भूमि ने दिशा दी
न आकाश ने संकेत
बस अन्तर्रात्मा ने कहा,
÷तू खोज में है÷।

न पथ स्थिर था
न गति और न लक्ष्य की निश्चित रेखा
फिर भी मैं चलता रहा
जैसे चलना मानो
जीवन की अनिवार्य शर्त हो

मैंने फूलों से पूछा-
क्या जीवन तुम्हारा सौंदर्य है?
मैंने पेड़ों से पूछा-
क्या जीवन तुम्हारी स्थिरता है?
मैंने नदियों से पूछा-
क्या जीवन तुम्हारी गति है?
मैंने रास्तों से पूछा-
क्या चलते रहना तुम्हारी नियति है?

और सबने मुस्कुराकर
मौन को ओढ़ लिया
और तब मैंने जाना
जीवन एक खोज है-
स्वयं की।

– जीवन एस. रजक

बीजेपी को जिताने का दम नेताओं में नहीं, पार्टी के कार्यकर्ताओं में है

● बिहार के अररिया में अमित शाह ने कार्यकर्ताओं को बताया मालिक

समस्तीपुर (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने अररिया में कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने कार्यकर्ताओं को मालिक कहकर संबोधित किया। अमित शाह ने कहा कि, सभी दल नेताओं के आधार पर चुनाव जीतते हैं सिर्फ हमारी पार्टी ऐसी है कि जिसको चुनाव जिताने का दम नेताओं में नहीं कार्यकर्ताओं में होता है। लालू और राहुल जी के लिए चुनाव अपनी पार्टी को जिताने के लिए चुनाव होता है। हम सब बीजेपी पार्टी वालों के लिए चुनाव घुसपैठियों को बाहर करने वाला चुनाव है। इस बार एनडीए को एक तिहाई बहुमत से हमें जिताइए। मैं वादा करता हूं घुसपैठियों को ढूंढ-ढूंढ कर भगा दूंगा। हमारे लिए ये चुनाव बिहार को बाढ़ से मुक्ति करने का चुनाव है। बिहार वालों को इस बार 4 दीवाली मनानी है। पहली दिवाली राम जब अयोध्या लौटेंगे उस दिन होगी।

सिखों पर टिप्पणी राहुल पर वाराणसी में चलेगा केस

अमेरिका में बोले थे-

क्या सिख को भारत में पगड़ी-कड़ा पहनने का अधिकार है

प्रयागराज (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी को इलाहाबाद हाईकोर्ट से झटका लगा है। अब उनके खिलाफ सिखों पर टिप्पणी मामले में वाराणसी कोर्ट में मुकदमा चलेगा। दरअसल, पिछले साल अमेरिका दौरे पर राहुल गांधी ने कहा था- लड़ाई इस बात की है कि क्या एक सिख को भारत में पगड़ी और कड़ा पहनने का अधिकार है। राहुल के इस बयान के खिलाफ नागेश्वर मिश्रा ने वाराणसी की मजिस्ट्रेट कोर्ट में याचिका दायर की, लेकिन कोर्ट ने खारिज कर दिया। इसके बाद उन्होंने एमपी/एमएलए कोर्ट में दोबारा याचिका दायर की, जिसे 21 जुलाई, 2025 को कोर्ट ने स्वीकार कर लिया। कोर्ट के फैसले के खिलाफ राहुल ने हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी।

तमिलनाडु में एक्टर विजय की रैली में भगदड़

29 लोगों की मौत, इनमें बच्चे शामिल, करूर में TVK की रैली थी

नमक्कल (एजेंसी)। तमिलनाडु के करूर में एक्टर विजय की रैली में भगदड़ मच गई। तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री एम ए सुब्रमणियन ने बताया कि हादसे में 29 लोगों की मौत हो गई। इनमें कई बच्चे भी शामिल हैं। हादसे में 30 से ज्यादा लोग घायल हैं। तमिलगा वेट्री कज़गम प्रमुख और एक्टर विजय की रैली में बड़ी संख्या में लोग पहुंचे थे। भीड़ इतनी ज्यादा बढ़ गई थी कि वहां पर हालात बिगड़ने लगे। अभिनेता से नेता बने विजय लोगों को संबोधित कर रहे थे। इसी दौरान कुछ लोगों के बेहोश हो जाने से उन्हें अपना भाषण बीच में छोड़कर रैली से निकल गए। शनिवार को विजय की रैली में हजारों की भीड़ पहुंची थी। एक्टर विजय बस पर चढ़कर भाषण दे रहे थे, तभी भगदड़ मची। बताया जाता है कि भीड़ इतनी ज्यादा हो गई थी कि लोगों के लिए सांस लेना मुश्किल हो गया। अचानक से वहां मौजूद लोग और कार्यकर्ता बेहोश होने लगे। इसके बाद अभिनेता विजय ने अपना भाषण रोक दिया और लोगों से शांति बनाए रखने की अपील करने लगे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 35 °c न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 28 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

म्यांमार में भारत और चीन आ रहे आमने-सामने

● अरबों डॉलर के खजाने के लिए दोनों देश ऐक्टिव ● नई दिल्ली का अचूक दांव,तिलमिला उठेगा ड्रैगन

नेपीडॉ (एजेंसी)। दुनिया में रेयर अर्थ के बाजार पर अभी चीन का प्रभुत्व है, जो अभी 70 फीसदी आपूर्ति का उत्पादन करता है। लेकिन अब इसे तोड़ने के लिए प्रयास शुरू हो गए हैं। दुनिया में दुर्लभ मृदा तत्वों के लिए नए क्षेत्रों की तलाशे जा रहे हैं, जिसमें भारत का पड़ोसी देश म्यांमार भी शामिल है, जहां बड़े भंडार मौजूद हैं। भारत की नजर भी इस पड़ोसी देश के रेयर अर्थ भंडार पर है। समाचार एजेंसी रॉयटर्स ने इस महीने की शुरुआत में बताया था कि भारत म्यांमार के सशस्त्र विद्रोही समूह काचिन इंडिपेंडेंस आर्मी को रेयर अर्थ तत्वों के स्रोत के लिए एक संभावित साझेदार के रूप में देख रहा है। रिपोर्ट में बताया गया था कि भारत की सरकारी स्वामित्व वाली इंडियन रेयर अर्थ लिमिटेड और निजी फर्म मिडवेस्ट एडवांस्ड मेटेरियल्स को उत्तरी काचिन राज्य में खदानों से अयस्क के नमूनों का मूल्यांकन करने का काम सौंपा गया है। आर्मी ने 2024 में रेयर अर्थ से समृद्ध सीमावर्ती क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया। इसने अब तक मुख्य रूप से चीनी खरीदारों के साथ ही कारोबार किया है। हालांकि, विद्रोही समूह की जुंटा शासन वाले कस्बों पर बढ़त और बीजिंग के रेयर अर्थ और चुंबकों के निर्यात पर लगातार लगाए जा रहे

प्रतिबंधों के चलते नई दिल्ली में इस संभावना पर विचार किया जा रहा है कि क्या जातीय विद्रोहियों के साथ सहयोग रणनीतिक विकल्प प्रदान कर सकता है। दुर्लभ मृदा तत्व 17 धातुओं का एक समूह है, जो चुंबकों, बैटरियों, इलेक्ट्रॉनिक्स, नवीकरणीय ऊर्जा प्रणालियों और मिसाइल जैसे उन्नत रक्षा प्रणालियों के आवश्यक है। लेकिन म्यांमार का रेयर अर्थ भंडार चीन और भारत में प्रतिस्पर्धा की स्थिति में ला रहा है। वर्तमान में चीन वैश्विक रेयर अर्थ उद्योग पर हावी है। यह 70 फीसदी खनन आपूर्ति का उत्पादन करता है और लगभग 90 प्रतिशत शोधन क्षमता रखता है। लेकिन हाल के वर्षों कड़े पर्यावरण नियमों के चलते चीन में घरेलू खनन में गिरावट आई है। बीजिंग पड़ोसी म्यांमार से आपूर्ति करते इसकी भरपाई कर रहा है। 2021 के तख्तापलट के बाद से म्यांमार का चीन को दुर्लभ मृदा तत्वों का निर्यात पांच गुना से ज्यादा बढ़ गया है। 2024 में यह लगभग 3.6 अरब डॉलर पहुंच गया। लगातार छह वर्षों से म्यांमार चीन का शीर्ष आपूर्तिकर्ता है। इस उछाल का बड़ा हिस्सा तब आया जब सैन्य शासकों ने उत्तरी काचिन में राज्य में अवैध खनन को बढ़ावा दिया गया। राज्य में डिस्प्रोसियम और टेरबियम के भंडार हैं। भारत के पास बड़े दुर्लभ मृदा भंडार हैं,लेकिन उनका दोहन करने की क्षमता सीमित है। इसके चलते देश आयात पर निर्भर हो जाता।

सीधी में महिला ने जीभ काटकर मां दुर्गा को चढ़ाई

13 घंटे तक खून से लथपथ पड़ी रही; बीमार पोते के लिए मांगी थी मन्नत

सीधी (नप्र)। सीधी में एक महिला ने मन्नत पूरी होने पर मां दुर्गा को अपनी जीभ काटकर अर्पित कर दी। महिला लगभग 13 घंटे तक खून से लथपथ वहीं पड़ी रही। पता चलता ही मौके पर भीड़ लगने लगी और भजन-कीर्तन शुरू हो गए। घटना रामगढ़ पंचायत की कोलान बस्ती में शुक्रवार की है। कल्लू बाई का पोता अनंत कोल (16) को एक साल

पहले तेज बुखार आया था। वह 6 महीने तक बिस्तर पर रहा। फिर चलने-फिरने में असमर्थ हो गया डॉक्टरों ने उसे लकवाग्रस्त तक घोषित कर दिया था। इस दौरान दादी कल्लू बाई ने मां दुर्गा से मन्नत मांगी थी कि यदि पोता ठीक हो गया, तो वह अपनी जीभ मां के चरणों में चढ़ा देगी।

सुबह जीभ चढ़ाई, रात में खोला मुंह- महिला का दावा है कि माता की कृपा से उसका पोता अब स्वस्थ है। इसी मन्नत को पूरा करने के लिए उसने शुक्रवार सुबह करीब 10 बजे दुर्गा प्रतिमा के सामने अपनी जीभ काटकर चढ़ा दी। देर रात करीब 11 बजे जब महिला ने अपना मुंह खोला, तो लोगों के बीच यह चर्चा फैल गई कि उसकी जीभ वापस आ गई है।

सूचना मिलने पर स्वास्थ्य विभाग भी सक्रिय हुआ। जिला अस्पताल सीधी के सिविल सर्जन ने बताया कि महिला की हालत फिलहाल स्थिर है, लेकिन उन्होंने ऐसे कृत्य को बेहद खतरनाक और जानलेवा बताया। उन्होंने लोगों से धार्मिक आस्था के नाम पर अपनी जान जोखिम में न डालने की अपील की।

उज्जैन में लगा 'आई लव मोहम्मद' का पोस्टर

पुलिस ने नगर निगम की टीम के साथ निकलवाया, हिंदूवादी बोले- त्योहार पर माहौल खराब करने की साजिश

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में शनिवार सुबह लोहे के पुल के पास मस्जिद और घरों पर 'आई लव मोहम्मद' लिखे बैनर लगाए मिले। जैसे ही लोगों की नजर इस पोस्टर पर पड़ी, इलाके में हलचल मच गई। सूचना मिलते ही पुलिस हरकत में आई और नगर निगम की मदद से दोपहर तक पोस्टर हटवा दिए। हिंदू जागरण मंच ने इस पर आपत्ति ली, तो पोस्टर हटाते समय बड़ी संख्या में मुस्लिम भी इकट्?ठा हो गए।

माहौल को देखते हुए पुलिस ने इलाके में चौकसी बढ़ा दी है। वहीं जांच शुरू कर दी है कि यह पोस्टर किसने और किस उद्देश्य से लगाया। मंच के कार्यकर्ता रितेश माहेश्वरी ने आरोप लगाया कि त्योहारों के समय ऐसे पोस्टर लगाकर माहौल खराब करने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने पोस्टर लगाने वालों पर सख्त कार्रवाई की मांग की।

कानपुर से शुरू हुआ विवाद- कानपुर जिले के रावतपुरा के सैय्यदनगर में बारावफात पर कुछ लोगों ने 'आई लव मोहम्मद' लिखा पोस्टर लगाया था। इसके बाद देश के दूसरे हिस्सों में ऐसी घटनाएं हुईं और अब उज्जैन में यह पोस्टर लगाया गया है। इस मामले में उत्तर प्रदेश की स्थिति को देखते हुए उज्जैन की पुलिस कोई रिस्क नहीं लेना चाहती थी। इसलिए पता चलते ही कार्रवाई की गई।

नगर निगम के दल को तुरंत बुलाया- लोहे के पुल के पास मस्जिद और घरों पर पोस्टर लगे होने का पता चलते ही महाकाल थाना प्रभारी गगन बादल को तुरंत मौके पर भेजा गया। बादल टीम के साथ पहुंचे और नगर निगम के दस्ते को बुलाकर पोस्टर हटवाया।

भोपाल की बेटी भारत की युवा राजदूत बनकर गई कजाकिस्तान

12 कैडेट्स में एमपी-सीजी से अकेली; पीएम रैली और एरोमॉडलिंग में बनी मुख्य ब्रीफर

भोपाल (नप्र)। भोपाल की रहने वाली और इंस्टीट्यूट फॉर एक्सीलेंस इन हायर एजुकेशन में बी.एससी. फारनिश साइंस तृतीय वर्ष की छात्रा कैडेट शैली तिवारी ने रिपब्लिक डे कैंप आरडीएस 2025 और यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम कजाकिस्तान दोनों में भारत का

प्रतिनिधित्व कर मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ का नाम रोशन किया। आरडीसी और बायईपी कजाकिस्तान दोनों में भारत का प्रतिनिधित्व छात्रा शैली तिवारी ने किया। राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस शिविर में जगह बनाना हर एनसीसी कैडेट के लिए सर्वोच्च उपलब्धि होती है, जिसकी चयन प्रक्रिया बहु-स्तरीय और कठिन होती है। शैली का यह सफर यूनिट स्तर पर शुरू हुआ, जहां उनकी फिटनेस और नेतृत्व क्षमता का मूल्यांकन हुआ। इसके बाद, उन्हें इंटर-यूनिट, इंटर-बटालियन और इंटर-ग्रुप प्रतियोगिताओं की कड़ी चुनौती से गुजरना पड़ा।

दिल्ली में मिला सुनहरा मंच और शीर्ष नेतृत्व का मौका- जनवरी 2025 में आयोजित आरडीसी के दौरान शैली को वे गौरवशाली अवसर प्राप्त हुए, जो हर कैडेट का सपना होते हैं।शीर्ष नेतृत्व को प्रस्तुति- यह ऐसा मंच था, जहां शैली ने अपनी प्रतिभा और आत्मविश्वास से देश के शीर्ष नेतृत्व के सामने प्रस्तुति दी। इस दौरान उनके सामने तत्कालीन उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, चीफ आफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान और यू ए.प चीफ मार्शल अमरप्रीत सिंह जैसे अधिकारी मौजूद थे।

यूएनएससी में भारत को बड़ी जिम्मेदारी देने का समर्थन

● अमेरिका से झगड़े के बीच चीन और रूस का बड़ा ऐलान

न्यूयॉर्क/बीजिंग (एजेंसी)। डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ युद्ध के बीच चीन ने चौंकाते हुए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत और ब्राजील को ज्यादा जिम्मेदारी देने का समर्थन कर कर दिया है। रूस के साथ

साथ चीन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य के रूप में भारत और ब्राजील की सुरक्षा परिषद में ज्यादा भूमिका निभाने की आकांक्षाओं का समर्थन किया है। ये काफी महत्वपूर्ण है और बदलते जियो-पॉलिटिक्स को दिखाता है। ब्रिक्स देशों ने इस संयुक्त दृष्टिकोण को अपनी रियो डी जेनेरियो घोषणा में शामिल किया था, जिसमें वैश्विक शासन में सुधार और ग्लोबल साउथ के देशों की आवाज को सशक्त बनाने पर जोर दिया गया था। आपको बता दें कि न्यूयॉर्क में यूएन महासभा की 80वीं बैठक से इतर ब्रिक्स देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक का भी आयोजन किया।

सोनम-मुस्कान के पुतले जलाने पर हाईकोर्ट की रोक

दशहरे पर इंदौर में 11 महिलाओं के पुतले शूर्पणखा का प्रतीक बताकर जलाए जाने थे

इंदौर (नप्र)। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर बेंच ने दशहरा पर्व पर इंदौर में हत्या और अपराध से जुड़ी 11 महिलाओं के पुतले शूर्पणखा के प्रतीक के तौर पर जलाने पर शनिवार को रोक लगा दी।

इन महिलाओं में पति राजा रघुवंशी की हत्या की आरोपी सोनम रघुवंशी मुख्य है। इसके अलावा, आगरा के नीले ड्रम हत्याकांड की आरोपी मुस्कान का नाम है। मुस्कान ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या की थी।इंदौर में पौरुष संस्था ने दशहरा पर इनका पुतना दहन करने का आयोजन किया था। लेकिन सोनम की मां संगीता रघुवंशी ने इस मामले में 25 सितंबर को हाईकोर्ट में याचिका लगाई थी।

मां का कहना था कि कोर्ट ने अभी उसे दोषी नहीं ठहराया है। इसलिए इस आयोजन को रोका जाए।कोर्ट ने कहा कि ऐसा करना लोकतांत्रिक रूप से पूरी तरह से अस्वीकार्य होगा। कोर्ट के आदेश की कॉपी शनिवार को सामने आई। कोर्ट ने अपने फैसले में साफ कहा-भले ही किसी पर आपराधिक केस हो, लेकिन उसका पुतला जलाना, उसकी छवि को सार्वजनिक रूप से नुकसान पहुंचाना, संविधान और कानून के खिलाफ है। पौरुष संस्था ने सोनम समेत 11 चेहरों वाला पुतला भी बनवाया है। इस पर सोनम के परिवार, खासतौर पर उसके भाई गोविंद और रघुवंशी समाज ने भी आपत्ति जताई थी।

मौलाना भूल गया, यूपी में अब किसका शासन है

● बरेली बवाल पर गरजे सीएम योगी, मौलाना तौकीर रजा गिरफ्तार

● कहा-ऐसा सबक सिखाएंगे, तुम्हारी पीढ़ियां दंगे करना भूल जाएंगी

बरेली (एजेंसी)। यूपी के बरेली में जुमे पर 'आई लव मोहम्मद' को लेकर बवाल के बाद पुलिस एक्शन मोड में आ गई है। इत्तेहादे मिल्लत काउंसिल के अध्यक्ष मौलाना तौकीर रजा समेत 8 लोगों को बरेली पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। 39 लोगों को हिरासत में लिया है। मौलाना को 14 दिन के लिए जेल भेज दिया गया है। इसके अलावा, 2000 अज्ञात लोगों पर 5 थानों में मुकदमे दर्ज किए हैं। वहीं, 10 मुकदमों में 7 में तौकीर रजा का नाम है। इधर, सीएम योगी ने एक कार्यक्रम में कहा-मौलाना भूल गया कि शासन किसका है। वो मानता था कि धमकी देंगे और जबरदस्ती जाम कर देंगे। हमने कहा कि जाम नहीं होगा। कर्फ्यू भी नहीं लगने देंगे। ऐसा सबक सिखाएंगे कि तुम्हारी आने वाली पीढ़ियां दंगे करना भूल जाएंगी।

दरअसल, शुक्रवार को मौलाना तौकीर रजा की अपील पर ही भीड़ सड़क पर उतर आई थी। पुलिस ने रोका तो पथराव कर दिया था। इसके पुलिस ने दौड़ा-दौड़ाकर पीटा था। इधर, लखनऊ की सड़कों पर नए होर्डिंग लगवा दिए गए हैं। इन पर लिखा है- आई लव श्री योगी आदित्यनाथ जी और आई लव बुलडोजर।

मूक-बधिर नाबालिग से गैंगरेप!

खेत में ले जाकर वारदात; तीन आरोपी गिरफ्तार

अशोकनगर (नप्र)। अशोकनगर के नईसराय थाना क्षेत्र के एक गांव में एक मूक-बधिर नाबालिग बच्ची से सामूहिक दुष्कर्म का मामला सामने आया है। यह घटना शुक्रवार देर शाम हुई, जब पड़ोसी गांव के तीन युवकों ने बच्ची को घर से कुछ दूर खेत में ले जाकर वारदात को अंजाम दिया।घटना के दौरान किसी व्यक्ति की नजर उन पर पड़ी, जिसने आरोपियों को पकड़ने का प्रयास किया। हालांकि, आरोपी मौके से भागने में सफल रहे। इसके बाद बच्ची अपने घर पहुंची और परिजनों को घटना की जानकारी दी। सूचना मिलने पर पुलिस गांव पहुंची और पीड़िता को देर रात थाने ले गई।

तीनों आरोपी पड़ोसी गांव के- चंदेरी एसडीओपी शैलेंद्र शर्मा ने बताया कि तीनों आरोपियों अजय, भगवत और जगदीश को गिरफ्तार कर लिया गया है। उनके खिलाफ दुष्कर्म और पॉक्सो एक्ट की धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। तीनों आरोपी पड़ोसी गांव किरोंदा के रहने वाले हैं और सभी बालिग हैं।

गुरुग्राम में भीषण हादसा

5 लोगों की मौत

● मरने वालों में यूपी के जज की बेटी भी शामिल

● हाथों में क्लब के बैंड मिले, कुल 6 लोग थे सवार

गुरुग्राम (एजेंसी)। हरियाणा के गुरुग्राम में अलसुबह दिल्ली की तरफ से आ रही तेज रफ्तार थार बेकाबू होकर डिवाइडर से टकराकर पलट गई, जिसमें 5 लोगों की मौत हो गई। हादसे में एक युवक गंभीर रूप से घायल है, जिसे मौके पर पहुंची पुलिस की टीम ने मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया है। यूपी नंबर की इस काले रंग की थार में कुल 6 लोग सवार थे, जिनमें तीन युवक और तीन युवतियां थीं। हादसे में दो युवक और तीन युवतियों की मौत हुई है।

वहीं एक मृत युवती की पहचान प्रतिष्ठा मिश्रा के रूप में हुई है जो रायबरेली के जज चंद्रमणि मिश्रा की बेटी हैं। घटना की सूचना मिलते ही गुरुग्राम पुलिस मौके पर पहुंची और आगे की जांच शुरू कर दी।

बिहार के मुंगेर में कब्रिस्तान की घेराबंदी पर जमकर बवाल

● गोलीबारी और पथराव से भारी तनाव, युवक को लगी गोली

ईंट-पत्थर चले,भारी फोर्स तैनात, वीडियो भी सामने आया

मुंगेर (एजेंसी)। मुंगेर में शनिवार को कब्रिस्तान की बाउंड्री को लेकर 2 पक्षों में गोलीबारी हुई है। इसमें एक युवक घायल है। फायरिंग के बाद पथराव किया गया है। मौके पर भारी संख्या में पुलिस बल मौजूद है। घायल शख्स का नाम अंकुश कुमार है। वो फरदा गांव का रहने वाला है। उसे इलाज के लिए मुंगेर सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना सफियाबाद थाना क्षेत्र स्थित फरदा गांव की है। ग्रामीण राकेश रंजन ने बताया कि बबलू मलिक और उसके परिजनों ने अंधाधुंध गोलियां चलाई। लगभग 50 राउंड गोली चली है।

गोलीबारी के बाद गुस्साए लोगों ने आरोपियों पर कार्रवाई की मांग को लेकर सफियाबाद-लखीसराय नेशनल हाईवे को बांक टोला फरदा गांव के पास जाम कर दिया है। फायरिंग में घायल अंकुश के परिजन ने बताया कि, बेटा दूसरे प्रदेश में रहकर मजदूरी करता है। आज ही वह सुबह दिल्ली से आया था। दिल्ली से आने के बाद वह अपने गांव के पास गंगा स्नान करने गया था। वापस घर लौट रहा था तभी उसे गोली लग गई। युवक के बाएं पैर में गोली लगी है,जो हड्डी को चीरते हुए निकल गई है।

हरियाणा में अब एग्रीकल्चरल लैंड पर भी लगेगा डेवलपमेंट चार्ज

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा में पहली बार शहरों के आसपास कृषि क्षेत्रों में भी एक्सटर्नल डेवलपमेंट चार्ज लगेगा। ये चार्ज तब लगेगा जब इन इलाकों में कोई कॉमर्शियल काम होगा, जैसे पेट्रोल पंप, स्कूल या अस्पताल का निर्माण। अभी तक ये चार्ज सिर्फ शहरों की जमीन पर ही लगता था। शहरी स्थानीय निकाय विभाग ने

मंजूरी के लिए ये प्रस्ताव सीएम के पास भेज दिया है। इस प्रस्ताव को आने वाली कैबिनेट की मंजूरी के लिए मीटिंग में भी रखा जाएगा। इसके लागू होते ही टाउन कंट्री प्लानिंग के तहत नोटिफाइड एरिया के अंतर्गत आने वाले कृषि क्षेत्र में हर कॉमर्शियल एक्टिविटी में चार्ज वसूला जाएगा। राज्य में अभी सिर्फ नगर निगमों, परिषदों और पालिका के एरिया में आने वाली लैंड पर ही वसूली की जाती है। कृषि क्षेत्र में पहले कॉमर्शियल एक्टिविटी के लिए सिर्फ चेंज ऑफ लैंड यूज का ही चार्ज लगता था।

लेह हिंसा पर पाकिस्तानी लिंक की शुरू हुई जांच

लगातार चौथे दिन कर्फ्यू,3 दिन पहले हिंसा हुई थी

लेह (एजेंसी)। लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने के आंदोलन चला रह पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। उनकी भूख हड़ताल के दौरान लेह में हिंसक प्रदर्शनों के बाद उन्हें अरेस्ट करके जोधपुर जेल भेज दिया गया है, तो वहीं दूसरी तरफ अब लद्दाख के डीजीपी ने बड़ा बयान दिया हैं। उन्होंने कहा है कि सोनम वांगचुक के पाकिस्तानी लिंक की जांच की जा रही है। लद्दाख के डीजीपी ने बताया है कि सोनम वांगचुक को क्यों गिरफ्तार किया गया। लद्दाख के डीजीपी के अनुसार 24 सितंबर की हिंसा में 17 सीआरपीएफ जवान और 70 से ज़्यादा नागरिक घायल हुए हैं। डीजीपी ने बड़ा खुलासा करते हुए कहा है कि पाकिस्तान का पीआईओ सोनम वांगचुक के संपर्क में था। उसे अरेस्ट किया गया है। सरकार ने वांगचुक को लेह में 24 सितंबर को हुई हिंसा का जिम्मेदार बताया था। इस हिंसा में 4 युवकों की मौत हुई थी और 80 लोग घायल हुए थे।

यात्रियों के भारत-पाकिस्तान मैच के लिए एयरपोर्ट पर टीवी लगाए

इन पर हवाई यात्री एशिया कप फाइनल मैच देख सकेंगे

इंदौर। देवी अहिल्याबाई होलकर इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए 18 बड़े टीवी स्क्रीन लगाए गए हैं। ये स्क्रीन अराइवल और डिपार्चर हॉल, सिक्योरिटी होल्ड एरिया, वीआईपी लाउंज, चेक-इन एरिया, बोर्डिंग गेट्स, और फूड एंड शॉपिंग जोन सहित टर्मिनल के प्रमुख स्थानों पर लगाई गई हैं।

ये सभी टीवी स्क्रीन 65 इंच की हैं और इन पर कुल 15 लाख रुपए का खर्च आया है। खास बात यह है कि इन स्क्रीन पर भारत-पाकिस्तान के बीच होने वाला एशिया कप फाइनल मैच भी यात्रियों को दिखाया जाएगा। एयरपोर्ट डायरेक्टर विपिन

कांत सेठ के अनुसार, इन स्क्रीनों पर यात्रियों के मनोरंजन और सूचनाओं से संबंधित कार्यक्रमों के साथ-साथ क्रिकेट मैच भी दिखाए जाएंगे। उन्होंने बताया कि हमारे लिए यात्रियों की सुविधा और सेवा सर्वोपरि है। आने वाले समय में हम और भी कई सुविधाएं जोड़ने जा रहे हैं। यात्रियों को महत्वपूर्ण मैचों के दौरान स्पोर्ट्स चैनल, और अन्य समय में न्यूज़ चैनल्स देखने की सुविधा भी इन स्क्रीन पर मिलेगी।

इसलिए की टीवी की व्यवस्था- एयरपोर्ट नियमों के अनुसार, यात्रियों को घरेलू उड़ानों के लिए डेढ़ से दो घंटे पहले और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए तीन घंटे पहले एयरपोर्ट पर पहुंचना होता है। चेक-इन और सिक्योरिटी जैसे आवश्यक प्रक्रियाओं में औसतन 30 मिनट का समय लगता है। लेकिन, बाकी समय यात्री अक्सर बोर होते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए यात्रा के इंतजार को सुखद बनाने के लिए इन टीवी स्क्रीनों की व्यवस्था की गई है।

रिक्लाइनर सीटें लगाई- इसके अलावा, इंदौर एयरपोर्ट पर यात्रियों की आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करने के लिए डिपार्चर हॉल में रिक्लाइनर सीटें भी लगाई गई हैं। वर्तमान में सात रिक्लाइनर कुर्सियां लगाई गई हैं। एयरपोर्ट प्रशासन के अनुसार, अगर यात्रियों की प्रतिक्रिया सकारात्मक रही, तो एक अलग लाउंज को पूरी तरह रिक्लाइनर लाउंज में तब्दील किया जा सकता है। इसके साथ ही टर्मिनल के अन्य हिस्सों में भी सीटों की संख्या बढ़ाने का कार्य जारी है, जिससे खासकर सुबह और शाम के व्यस्त समय में यात्रियों को बैठने में परेशानी न हो।

60 मेगावाट सोलर पार्क नवंबर से शुरू होगा

इंदौर। नगर निगम द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में उठाया गया बड़ा कदम अब साकार होने जा रहा है। जलुद में बन रहा 60 मेगावाट क्षमता का सोलर पार्क लगभग तैयार है और नवंबर से बिजली उत्पादन शुरू कर देगा। शुक्रवार को महापौर पुष्यमित्र भार्गव की अध्यक्षता में हुई बैठक में परियोजना से जुड़ी एजेंसियों के अधिकारी उपस्थित रहे। महापौर ने बताया कि यह परियोजना मां नर्मदा जल परियोजना पर आने वाले बिजली खर्च को कम करने के उद्देश्य से शुरू की गई थी। इसे ग्रीन बॉन्ड से वित्त पोषित किया गया था, जिस पर देशभर के निवेशकों ने भरोसा जताया।

नगर निगम परिषद ने इस निर्णय को पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा बचत को ध्यान में रखते हुए लिया। परियोजना शुरू होने के बाद नगर निगम को हर माह लगभग 4 से 5 करोड़ रुपये की बिजली बिल की बचत होगी। फिलहाल अंतिम चरण में कनेक्शन व चार्जिंग टेस्टिंग का कार्य चल रहा है। महापौर ने बताया कि ट्रांसमिशन से जुड़ी चुनौतियों का समाधान शीघ्र किया जाएगा। यह देश का पहला अवसर होगा जब किसी नगर निगम ने ग्रीन बॉन्ड से इतना बड़ा सोलर पार्क तैयार किया है।

शुभम चौकसे पर रासुका की कार्रवाई

इंदौर। कलेक्टर शिवम वर्मा ने लगातार आपराधिक गतिविधियों में लिप्त रहने पर कुख्यात अपराधी शुभम चौकसे (30) निवासी 74 आदर्श बिजासन नगर को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (रासुका) के तहत निरुद्ध करने के आदेश जारी किए हैं। शुभम वर्ष 2015 से लगातार अवैध वसूली, चाकूबाजी, मारपीट, जान से मारने की धमकी, अश्लील गालियां देने, जिला बदर का उल्लंघन, अवैध हथियार रखने, अवैध शराब बेचने और नशे का सेवन करने जैसे अपराधों में संलिप्त रहा है। उसके विरुद्ध विभिन्न थानों में कई प्रकरण दर्ज हैं। लगातार बढ़ते अपराधों और उसकी आपराधिक प्रवृत्ति को देखते हुए यह सख्त कार्रवाई की गई है।

पुलिस की शक्ति मोबाइल ने बढ़ाई सुरक्षा

इंदौर। नवरात्रि पर्व के दौरान महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इंदौर पुलिस आयुक्त संतोष कुमार सिंह के निर्देशन में शहर भर में 13 शक्ति मोबाइल सक्रिय रूप से पेट्रोलिंग कर रही हैं। ये टीमें भक्ति स्थलों और गरबा पंडालों के आसपास संदिग्धों व असामाजिक तत्वों पर कड़ी नजर रख रही हैं। पेट्रोलिंग के दौरान थाना परदेशीपुरा क्षेत्र में मालवा मिल गरबा पंडाल के पास एक संदिग्ध को चेक किया गया। वह शराब के नशे में धुत होकर वाहन चला रहा था। शक्ति मोबाइल टीम ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी को पकड़ा और धारा 185 के तहत कार्यवाही कर उसकी बुलेट बाइक जप्त की। वहीं,थाना हीरा नगर क्षेत्र में कनकेश्वरी गरबा ग्राउंड पर डेढ़ वर्षीय मासूम बालक भीड़ में गुम हो गया।शक्ति मोबाइल टीम ने तत्परता दिखाते हुए बच्चे को ढूंढा और तस्दीक उपरांत उसके परिजनों को सकुशल सौंप दिया। परिजनों ने पुलिस का आभार व्यक्त किया।

लोडिंग चालक ने जहर खाया, पुलिस ने बचाया

इंदौर। पुलिस जहां अपराध नियंत्रण और कानून व्यवस्था संभालती है,वहीं सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन भी पूरी संवेदनशीलता के साथ करती है। इसका उदाहरण नौलखा चौराहे पर सामने आया, जब एक लोडिंग चालक ने जहरीला पदार्थ खा लिया।

यातायात पुलिस उपनिरीक्षक संत बहादुर अपनी टीम के साथ ड्यूटी पर थे। टीम में आरक्षक सुरेंद्र सिंह गुर्जर, महिला आरक्षक ज्योति भूली रडार और आरक्षक शैलेन्द्र त्यागी शामिल थे। उन्होंने देखा कि एक लोडिंग वाहन सिग्नल पर खड़ा है और आगे नहीं बढ़ रहा। नजदीक जाकर पूछताछ करने पर चालक ने बताया कि उसने सल्फास खा लिया है और मदद की गुहार लगाई। पुलिसकर्मियों ने तुरंत मानवता का परिचय देते हुए चालक को अपनी वैन से एमवाय अस्पताल पहुँचाया, जहाँ उसका उपचार जारी है। मामले की जांच संबंधित थाना पुलिस कर रही है।

30 लाख की चोरी का खुलासा,चोर गिरफ्तार

इंदौर। विजय नगर थाना क्षेत्र में हुई 30 लाख की चोरी का खुलासा पुलिस ने कर दिया है। स्कीम नंबर 74 में रहने वाले जगदीश पांडा के घर से लाखों की ज्वेलरी और नकदी चोरी हो गई थी। चौंकाने वाली बात यह रही कि आरोपी वारदात के दौरान सीसीटीवी का डीवीआर भी साथ ले गया, ताकि पहचान न हो सके। शिकायत दर्ज होने के बाद पुलिस ने तकनीकी जांच और सूचना के आधार पर आरोपी को खंडवा जिले के खड़की गांव से दबोच लिया। एसीपी आदित्य पटले ने बताया कि आरोपी की पहचान दीपक बंसल के रूप में हुई है। पूछताछ में उसने चोरी की वारदात स्वीकार की और बताया कि उसने चोरी का माल गड्ढे में छिपाकर रखा था। पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर सोने-चांदी के जेवर और अन्य सामान बरामद कर लिया है। जानकारी के अनुसार, आरोपी पर पहले से ही 19 आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं और वह आदतन अपराधी है। पुलिस अब उससे अन्य वारदातों को लेकर भी पूछताछ कर रही है। इस बड़ी कार्रवाई से पुलिस ने न केवल चोरी का खुलासा किया, बल्कि पीड़ित परिवार को राहत भी दिलाई।

धार बस खाई में पलटी, 12 घायल

धार। इंदौर से धार जा रही बस बेटमा थाना क्षेत्र के ग्राम मोतल के पास अनियंत्रित होकर खाई में पलट गई। हादसे में कुल 12 लोग घायल हुए हैं, जिनमें से दो की स्थिति गंभीर बताई जा रही है। घायलों को तत्काल 108 एंबुलेंस की मदद से बेटमा के सामुदायिक अस्पताल में भर्ती कराया गया। अस्पताल में घायलों का प्राथमिक उपचार जारी है। स्थानीय लोगों ने भी दुर्घटना के समय राहत कार्य में मदद की।

बेटमा थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे और दुर्घटना के कारणों की जानकारी जुटाई। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि बस चालक बस पर नियंत्रण खो बैठा, जिससे यह हादसा हुआ। पुलिस ने बस और चालक को कब्जे में लेकर आगे की कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। स्थानीय प्रशासन ने भी राहत और सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

जोन-1 में तैनात होंगे दो एसीपी, एसीपी के सर्किल में बदलाव करने की तैयारी

एसीपी के कार्य विभाजन में कई विसंगतियां मिली, उसमें सुधार होगा

इंदौर। एरोड्रम थाना क्षेत्र में हुई ट्रक दुर्घटना ने चार वर्ष पुरानी विसंगती उजागर कर दी। अफसरों ने अध्ययन कर एसीपी के सर्किल बदलने का फैसला लिया है। यातायात व्यवस्था के लिए जोन-1 में दो एसीपी की नियुक्ति की जा रही है। पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह ने इनकी जिम्मेदारियां भी तय कर दी।

शिक्षक नगर से बड़ा गणपति के बीच हुई घटना में तीन लोगों की मौत हुई थी। एसीपी (ट्रैफिक) सुदेश सिंह सहित निरीक्षक दीपक यादव, अर्जुनसिंह पंवार को निलंबित करना पड़ा। पिछले दिनों हुई बैठक में चला एसीपी के कार्य विभाजन में कई विसंगतियां हुई है। ऐसा चार साल पूर्व आयुक्त प्रणाली के दौरान हुआ है। घटना स्थल या ट्रैफिक जाम के

करीब होने के बाद भी एसीपी उनका क्षेत्र न होने का बहाना बना कर बच जाते है। गुरुवार को डीसीपी(ट्रेफिक) आनंद कलादगि ने विभाजन का प्रस्ताव तैयार कर आयुक्त संतोष कुमार सिंह को सौंपा है। नए प्रस्ताव के अनुसार अब प्रत्येक जो दो, तीन, चार में एक-एक एसीपी और जोन-1 में दो एसीपी पदस्थ होंगे। अध्ययन के अनुसार जोन-1 के बीच में जोन-4 का हिस्सा भी आता है। इसलिए उसमें दो एसीपी पदस्थ करने का निर्णय लिया गया है।

एडीशनल सीपी आरके सिंह के अनुसार दशहरा बाद नई व्यवस्था लागू की जाएगी। अभी तक जोन में पदस्थ डीसीपी भी ट्रैफिक एसीपी को लेकर गफलत में रहते थे। लेकिन, अब एसीपी को जोन के एसीपी के संपर्क में रहना होगा। धरना-प्रदर्शन और जुलूस के दौरान होने वाली बैठकों में भी एसीपी को उपस्थित रहना होगा।

125 चेकिंग पाइंट में बदलाव- पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह ने वर्षों से एक ही स्थान पर जमे पुलिसकर्मियों को इधर-उधर भेजा है। बीट में भी बड़ा बदलाव हुआ है। 125 चेकिंग पाइंट से करीब 500 पुलिसकर्मियों की अदला बदली कर उनकी दूसरे स्थान पर ड्यूटी लगाई है। इसी तरह 13 क्रेन से भी 26 पुलिसकर्मियों को हटा दिया गया है। एडिशनल सीपी आरके सिंह के अनुसार कार्यालयों में पदस्थ करीब 80 पुलिसकर्मियों को भी हटाया गया है।

युवती को पहले मॉल घुमाया, फिर उसे होटल ले जाकर दुष्कर्म किया

लव जिहाद कर युवती पर धर्म बदलने का दबाव बनाया

इंदौर। तिलक नगर पुलिस थाने में खलघाट थाने से एक गंभीर मामला ट्रांसफर होकर आया है। इसमें एक 19 वर्षीय युवती ने कुक्षी निवासी युवक पर रेप और धर्म परिवर्तन के लिए दबाव डालने का आरोप लगाया है। फिलहाल पुलिस आरोपी की तलाश और पूरे मामले की जांच में जुटी है।

पीड़िता मूल रूप से कुक्षी की रहने वाली है और इंदौर के सुदामा नगर इलाके में रहकर पढ़ाई कर रही है। उसकी दोस्ती आरोपी सफान पुत्र निसान कुरैशी (निवासी- मस्जिद के पास, कुक्षी) से इंस्टाग्राम पर हुई थी। युवती के मुताबिक 25 सितंबर को आरोपी सफान इंदौर आया और उसे सी-21 मॉल में मिलने बुलाया। यहां से दोनों तिलक नगर क्षेत्र के एक होटल गए, जहां आरोपी ने उसके साथ जबरन संबंध बनाए। आरोपी ने युवती पर मुस्लिम धर्म अपनाने का दबाव बनाते हुए कहा कि तभी दोनों शादी कर पाएंगे। वह युवती को महाराष्ट्र ले जाने की फिराक में था। सफान ने उसे बस में बैठाकर गांव की ओर ले गया। रास्ते में सफान के रिश्तेदार भी मिले और उन्होंने एक वीडियो बनवाया, जिसमें युवती से जबरन कहलवाया गया कि वह अपनी मर्जी से सफान के साथ है और किसी ने दबाव नहीं डाला है।

खलघाट कसरावद फाटे के पास युवती के समाज के लोग और परिजन पहुंचे, जिसके बाद आरोपी और उसके रिश्तेदार युवती को वहीं छोड़कर भाग गए। युवती के परिजन उसे थाने लेकर पहुंचे और प्रकरण दर्ज कराया। कुक्षी पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर आरोपी सफान और उसके रिश्तेदारों के खिलाफ रेप और धर्म परिवर्तन के लिए धमकाने समेत गंभीर धाराओं में एफआईआर दर्ज की और केस को तिलक नगर पुलिस को ट्रांसफर किया है।

प्रेमी ने शादी का वादा पूरा नहीं किया, युवती ने आत्महत्या की

फोन से मिली चैटिंग से खुलासा, प्रेमी पर मामला दर्ज

इंदौर भंवरकुआं इलाके में प्रेमिका की मौत के मामले में पुलिस ने उसके प्रेमी के खिलाफ केस दर्ज किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपी ने शादी का वादा करके बाद में मुकर गया था, जिससे युवती ने आत्महत्या कर ली।

भंवरकुआं पुलिस के एसआई धर्मवीर सिंह चौहान ने बताया कि आरती (पुत्री गुलाब शर्मा, निवासी भंवरकुआं) ने 28 अप्रैल को आत्महत्या कर ली थी। मौके से पुलिस ने उसका आईफोन जब्त किया था। मोबाइल की जांच में इंस्टाग्राम चैटिंग और कॉल रिकॉर्डिंग मिली। चैटिंग के अनुसार, 24 अप्रैल को आरती और उसके प्रेमी प्रशांत (पुत्र मोहन चंद्र तिवारी, निवासी बद्रीपुरा, हल्द्वानी, उत्तराखंड) के बीच बहस हुई थी। इसमें प्रशांत ने आरती से कहा था कि उसका सिर्फ इस्तेमाल किया है। इसके बाद दोनों के बीच मोबाइल पर भी विवाद हुआ।

जांच के दौरान यह भी सामने आया कि प्रशांत ने आरती से शादी का वादा किया था, लेकिन बाद में इंकार कर दिया। आरती के पिता और परिवार के अन्य लोगों ने भी पुलिस को दिए बयानों में यही बात बताई। सभी तथ्यों और सबूतों के आधार पर पुलिस ने प्रशांत के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का केस दर्ज किया है। मामले की आगे जांच जारी है।

दूसरे चरण में शहर तक पहुंची मेट्रो ट्रेन, 13 किलोमीटर का ट्रायल रन

गांधी नगर से हीरा नगर तक मेट्रो का ट्रायल रन हो चुका

इंदौर। मेट्रो ट्रेन का दूसरा ट्रायल रन शुक्रवार शाम को हुआ। इसके साथ ही पहली बार मेट्रो ट्रेन शहर के आबादी क्षेत्र हीरा नगर तक पहुंची। उसकी स्पीड काफी कम थी। मेट्रो ट्रेन के इस ट्रायल रन को देखने के लिए लोग सड़कों पर रुक गए। यह पहला मौका है जब गांधी नगर मेट्रो स्टेशन से हीरा नगर तक मेट्रो ट्रेन आई। कुल 13 किलोमीटर तक मेट्रो का ट्रायल रन हो चुका है। चार दिन पहले 11 किलोमीटर तक मेट्रो का ट्रायल रन किया गया था।

शुक्रवार शाम को जब हॉर्न बजाते हुए मेट्रो ट्रेन के चमचमाते कोच शहर की तरफ बढ़ रहे थे तो लोगों की निगाहें उस पर टिक गए। कुछ वाहन चालक तो वाहन रोक कर मेट्रो ट्रेन को देखने लगे। पांच से दस किलोमीटर प्रति घंटा की स्पीड पर ट्रेन का संचालन किया गया और यह देखा गया कि हीरा नगर तक मेट्रो ट्रेन के ट्रैक में कोई खामी तो नहीं है।

रेडिसन चौराहा तक मेट्रो जल्द

अफसरों का फोकस अब मेट्रो ट्रेन के 17 किलोमीटर हिस्से में ट्रायल रन का है। गांधी नगर से रेडिसन चौराहा तक जब

मेट्रो ट्रेन चलेगी तो नियमित यात्री मिल सकेंगे। दो बड़े शैक्षणिक संस्थानों के अलावा टीसीएस और इंफोसिस के कैंपस भी सुपर कॉरिडोर पर है। इसमें काम करने वाले कर्मचारी व विद्यार्थियों के लिए सफर और आसान हो जाएगा। अभी सात किलोमीटर में ट्रेन का संचालन हो रहा, वहां कोई बसाहट नहीं है।

अगले साल तक मेट्रो ट्रेन रेडिसन चौराहे तक चलाई जाएगी। सिंहस्थ से पहले तक बंगाली कॉलोनी तक मेट्रो का संचालन हो सकता है, हालांकि, मध्य हिस्से में मेट्रो ट्रेन के काम शुरू नहीं हो पाया है। इस हिस्से में मेट्रो का अंडरग्राउंड ट्रेक बनाया जाना है। मेट्रो ट्रेन का ट्रैक एयरपोर्ट से गांधीनगर, सुपर कॉरिडोर, सुखलिया ग्राम, विजय नगर, खजराना चौराहा, बंगाली चौराहा, नाथ मंदिर, नगर निगम, बड़ा गणपति, एयरपोर्ट रोड होते हुए एयरपोर्ट तक बनेगा। इसकी कुल लंबाई 31 किलोमीटर है। एयरपोर्ट वाले हिस्से में अंडरग्राउंड मेट्रो के निर्माण के लिए खुदाई शुरू हो चुकी है।

'एमवाय' में युवक के शरीर से लोहे के 3 सरिए निकाले गए

जटिल सर्जरी सफलता से कर युवक जान बचाई

इंदौर। महाराजा यशवंतराव चिकित्सालय के डॉक्टरों को एक युवक की जटिल सर्जरी कर जीवन बचाने में सफलता मिली है। एमवाय चिकित्सालय से मिली जानकारी के अनुसार शाजापुर के नितेश पिता मुकेश जायसवाल (उम्र 25 वर्ष) जो पिछले 4 वर्ष से इंदौर में सेंटिंग का कार्य कर रहा था। 20 सितंबर की दोपहर 4 बजे फिनिक्स मॉल के सामने एक साइड पर सेंटिंग का कार्य करते हुए दूसरी मंजिल से पैर फिसलने से नीचे सेप्टिक टैंक में बने कॉलम के सरिये पर गिरने से पेट में आर पार हो गए थे। इस दर्दनाक घटना के बाद उन्हें तत्काल एमवाय चिकित्सालय में उपचार के लिए लाया गया। चिकित्सालय में विशेष डॉक्टरों ने उपचार शुरू किया। मरीज की गंभीर हालत को मद्देनजर विशेष चिकित्सकों की टीम ने त्वरित जांच कर तत्काल उपचार प्रारम्भ किया।

दो सरिए शरीर के आर-पार हुए जानकारी के अनुसार नितेश के शरीर में दो लोहे के सरिये पेट

से आर पार हो चुके थे। एक सरिया उल्टी तरफ की जांघ में आर पार हुआ था। डॉ. सुदर्शन ओडिया ने तात्कालिक रूप से तुरंत ऑपरेशन करने का निर्णय लिया। यदि सरियों को समय से नहीं निकालते तो उनकी जान जाने का खतरा था। ऑपरेशन के दौरान सरियों के कारण एक लीटर खून जो पेट में जमा हुआ था उसे निकाला गया। धीरे-धीरे सावधानीपूर्वक एक-एक करके तीनों सरियों को निकाला गया और सरियों के कारण बड़ी आंत, छोटी आंत और अन्त्रपेशी में तीन स्थानों पर छेद हो गया था, जिसे ऑपरेशन के दौरान सिलकर ठीक किया गया। ऑपरेशन के दौरान पता चला कि सरियों के कारण रीढ़ की हड्डी और कूल्हे की हड्डी के आर पार जाने के कारण फ्रैक्चर हो गया था। जिसका भी तुरंत इलाज किया गया। पाँच दिन मरीज का एमवाय अस्पताल के आईसीयू में 24 घंटे डॉक्टर की निगरानी में गहन इलाज किया गया। शुक्रवार को पांचवें दिन नितेश ने अच्छे से खाना पीना प्रारम्भ किया। अब मरीज की स्टेबल कंडीशन में जनरल वार्ड शिफ्ट किया गया और मरीज की दो से तीन दिन में छुट्टी कर दी जाएगी। यदि समय पर एमवाय के डॉक्टर्स की टीम ने मरीज का इलाज नहीं किया होता तो मरीज को जान का जोखिम था।

4 से 5 लाख का खर्च बचा यही इलाज यदि किसी निजी अस्पताल में होता तो जटिल सर्जरी में कम से कम 4 से 5 लाख का खर्चा होता। जबकि, एमवाय अस्पताल में निशुल्क किया गया और मरीज की जान बचाई गई। इस जटिल सर्जरी में जनरल सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अरविंद कुमार शुक्ल के नेतृत्व में प्रोफेसर डॉ सुदर्शन ओडिया, असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ संजय कुमार महाजन, डॉ सतीश वर्मा, डॉ यश अग्रवाल, डॉ अभिनव सोनी, डॉ अर्पित तिवारी, डॉ ध्रुव सिंह गोहिल की टीम ने सफलता पायी। इस ऑपरेशन में निश्चेतना विभाग से प्रोफेसर डॉ रश्मि पाल, असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ रवि बारडे और उनकी टीम की भी भूमिका रही। सभी चिकित्सकों ने अपनी विशेषज्ञता और त्वरित निर्णय क्षमता का परिचय देते हुए सफलतापूर्वक ऑपरेशन संपन्न किया।

दो स्कूल, एक कॉलेज की 6 बसों के फिटनेस कैंसिल, 4 बसें जब्त

इन बसों से 40 हजार रुपए जुर्माना भी वसूल किया गया

इंदौर। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी प्रदीप कुमार शर्मा के नेतृत्व में शुक्रवार को एआरटीओ अर्चना मिश्रा, एआरटीओ राजेश गुप्ता और आरटीओ स्टॉफ की टीम ने बायपास स्थित 2 स्कूल एवं 1 कॉलेज में मौके पर जाकर स्कूली वाहनों की जांच की।

जिनमें 6 वाहनों में इमरजेंसी गेट जाम होने, अग्निशमन यंत्र चालू हालत में नहीं होने, प्राथमिक उपचार पेटी का व्यवस्थित नहीं होने, फ्लोर एरिया ख़राब होने, वाहन का रख रखाव सही नहीं होने, सुरक्षा मानकों की पूर्ति नहीं होने से मौके पर ही उनका फिटनेस प्रमाण पत्र निरस्त किया गया। 4 वाहनें बिना परमिट होने से उन्हें जब्त किया। साथ ही अन्य वाहनों से मोटर यान अधिनियम की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत 40 हजार रुपये शमन शुल्क वसूल किया गया। चैकिंग के दौरान ईवा वर्ल्ड स्कूल की बस नियमानुसार पाई जाने पर स्कूल प्रबंधन की सराहना भी की गई ।

जाँच के दौरान 1 कॉलेज की 12 बसें उनके परिसर में कंडम स्थिति में खड़ी पाई जाने पर कॉलेज प्रबंधन को उक्त वाहनों का पंजीयन निरस्त कराए जाने के लिए निर्देशित किया गया। चेकिंग के दौरान छात्र-छात्राओं से चर्चा कर फीडबैक भी लिया गया। स्कूल / शैक्षणिक संस्थाओं की बसों में सुरक्षा मानकों की पूर्ति सुनिश्चित कराए जाने के लिए जिले में स्थित स्कूली वाहनों की आकस्मिक चेकिंग अभियान निरंतर जारी रहेगा।

जयंती विशेष

हर्षवर्धन पांडे
लेखक पत्रकार हैं।

'स्वर कोकिला' लता मंगेशकर

लता मंगेशकर का जन्म 28 सितंबर 1929 को मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में पंडित दीनानाथ मंगेशकर के मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। लता पांच भाई बहनों में सबसे बड़ी थी। लता मंगेशकर का जन्म के वक्त नाम 'हेमा' रखा गया था लेकिन कुछ साल बाद अपने थिएटर के एक पात्र 'लतिका' के नाम पर दीनानाथ जी ने उनका नाम 'लता' रखा। लता मंगेशकर के पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर एक क्लासिकल सिंगर और थिएटर आर्टिस्ट थे। लता की तीन बहनें मीना, आशा, उषा और एक भाई हृदयनाथ मंगेशकर थे। पांच साल की उम्र में ही लता जी ने अपने पिता से संगीत की शिक्षा लेनी शुरू की और वह वह थिएटर में एक्टिंग किया करती थी। जब वो स्कूल गयी तो वहां के बच्चों को संगीत सिखाने लगी लेकिन जब लता को अपनी बहन 'आशा' को स्कूल लाने से मना किया गया तो उन्होंने स्कूल जाना छोड़ दिया।

स्वर कोकिला लता मंगेशकर भारतीय संगीत जगत की एक ऐसी शख्सियत हैं जिनका नाम संगीत प्रेमियों के दिलों में अमर है। 28 सितंबर 1929 को इंदौर मध्य प्रदेश में जन्मी लता मंगेशकर ने अपने सात दशक से अधिक लंबे करियर में हजारों गीत गाए जो न केवल हिंदी सिनेमा बल्कि भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन गए। उनकी मधुर और भावपूर्ण आवाज ने उन्हें विश्व स्तर पर ख्याति दिलाई। उनकी मखमली और जादुई आवाज की दुनिया दीवानी थी। आज भी उनकी आवाज़ दिल को छूती नहीं,बल्कि दिल में बस जाती है । हर दिल अजीज लता मंगेशकर ने अपनी आवाज से हिंदी सिनेमा की गायकी में ऐसे चार चाँद लगाए कि हर कोई उनका मुरीद हुए बिना नहीं रह पाया। सही मायनों में हिंदी सिनेमा की गायकी की दुनिया को लता ने अपने मधुर स्वर से नई दिशा देने का काम किया। लता की आवाज हर किसी भी हर किसी संगीत प्रेमी के दिल के तारों को झंकृत कर देती है।

लता मंगेशकर का जन्म 28 सितंबर 1929 को मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में पंडित दीनानाथ मंगेशकर के मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। लता पांच भाई बहनों में सबसे बड़ी थी। लता मंगेशकर का जन्म के वक्त नाम 'हेमा' रखा गया था लेकिन कुछ साल बाद अपने थिएटर के एक पात्र 'लतिका' के नाम पर दीनानाथ जी ने उनका नाम 'लता' रखा। लता मंगेशकर के पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर एक क्लासिकल सिंगर और थिएटर आर्टिस्ट थे। लता की तीन बहनें मीना, आशा, उषा और एक भाई हृदयनाथ मंगेशकर थे। पांच साल की उम्र में ही लता जी ने अपने पिता से संगीत की शिक्षा लेनी शुरू की और वह वह थिएटर में एक्टिंग किया करती थी। जब वो स्कूल गयी तो वहां के बच्चों को संगीत सिखाने लगी लेकिन जब लता को अपनी बहन 'आशा' को स्कूल लाने से मना किया गया तो उन्होंने स्कूल जाना छोड़ दिया।

सुरों की मल्लिका लता मंगेशकर का भी बॉलीवुड में सफर इतना आसान नहीं था। काफी समय तक उन्हें कोई प्रोजेक्ट नहीं मिला। प्रोजेक्ट नहीं मिलने की दो वजहें थीं। एक तो साल 1940 के दौर में जब उन्होंने फिल्मी दुनिया में एंट्री ली बॉलीवुड में नूरजहां और शमशाद का दबादबा था और दूसरा लता की आवाज़ की पिच काफी हाई थी और आवाज़ पतली। ऐसे में उस दौर के चलन में चल रहे गानों के मुताबिक आवाज भी फिट नहीं बैठती थी। प्रोड्यूसर शशिधर मुखर्जी ने लता मंगेशकर की आवाज को 'पतली आवाज' कहकर अपनी फिल्म 'शहीद' में गाने से मना कर दिया था। फिर म्यूजिक डायरेक्टर गुलाम हैदर ने लता मंगेशकर को फिल्म 'मजबूर' में 'दिल मेरा तोडा, कहीं का ना छोड़ा' गीत गाने को कहा जो काफी सराहा गया। लता मंगेशकर के पिता नहीं चाहते थे कि वो फ़िल्मों के लिये गाने गाये लेकिन लता मंगेशकर बचपन से ही गायक बनना चाहती थी। लता ने जोगलेकर द्वारा निर्देशित एक फ़िल्म कीर्ति हसाल के लिये पहली बार गाना गाया था लेकिन उनके पिता नहीं चाहते थे कि लता फ़िल्मों के लिये गाये इसलिये इस गाने को फ़िल्म से निकाल दिया गया लेकिन वसंत जोगलेकर लता की प्रतिभा से काफी प्रभावित हुए। साल 1942 में उनके पिता इस दुनिया को छोड़ गए और लता मंगेशकर के कंधों पर परिवार को संभालने की सारी ज़िम्मेदारी आ गई ।

पिता की मौत के बाद लता को पैसों की बहुत किल्लत झेलनी पड़ी और काफी संघर्ष करना पड़ा। इसी वज़ह से लता मंगेशकर ने 1942 से लेकर 1948 तक करीब 8 हिंदी और मराठी फिल्मों में काम किया।1940 के दशक में लता मंगेशकर जब फिल्मों में गाना शुरू किया तो वो लोकल पकड़कर अपने घर मलाड जाती थी। वहां से उतरकर पैदल स्टूडियो बॉम्बे टॉकीज जाती। रास्ते में किशोर दा भी मिलते लेकिन वो एक दूसरे को नहीं पहचानते थे। किशोर कुमार लता मंगेशकर की ओर देखते रहते। कभी हंसते। कभी अपने हाथ में पकड़ी छड़ी घुमाते रहते। लता मंगेशकर को किशोर कुमार की ये हरकत अजीब लगती थी।हिंदी सिनेमा में उन्होंने पहला गाना साल 1943 में गाया। ये गाना था फिल्म 'गजाभाऊ' का और इसके बोले थे माता एक सपूत की दुनिया बदल दे तू ।

हालांकि इस गाने से लता को कुछ खास पहचान नहीं मिली। लता मंगेशकर खेमचंद प्रकाश की एक फिल्म में गाना गा रही थी। एक दिन किशोर दा भी उनके पीछे-पीछे स्टूडियो पहुंच गए। लता मंगेशकर ने किशोर कुमार की खेमचंद से शिकायत की। तब खेमचंद ने लता को बताया कि किशोर कुमार अशोक कुमार के छोटे भाई हैं।

1948 में म्यूज़िक कंपोज़र गुलाम हैदर ने लता के बड़ा ब्रेक दिया, जिसके बाद उनका संघर्ष का दौर खत्म हुआ और फिल्मी दुनिया में ऐसा सिक्का चला कि लोग उनकी आवाज के दीवाने हो गए। आज भी लता की गायकी सिल्वर स्क्रीन में चार चाँद लगा देती है। फिल्म 'मजबूर' में लता मंगेशकर ने 'दिल मेरा तोड़ा मुझे कहीं का न छोड़ा' गाना गया। 1949 में उन्होंने फिल्म 'महल' में गाया उनका गाना 'आएगा आनेवाला' बेहद पसंद किया गया। असल में यह गाना इतना लोकप्रिय हुआ कि लता मंगेशकर रातोंरात स्टार बन गई। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इसके बाद उन्होंने 'दुलारी', 'बरसात' और 'अंदाज़' में अपनी आवाज़ का जादू बिखेरा। चंद महीनों में ही लता के प्रति लोगों का नजरिया बदला और उन्होंने अपनी अलग पहचान बना ली और फिर इसके बाद उन्हें मुड़कर पीछे नहीं देखना पड़ा।

60, 70 और 80 के दशक में गाए गए लता मंगेशकर के ज्यादातर गाने ऑल टाइम हिट्स की कैटगरी में आते हैं। कहा जाता है कि बड़े-बड़े प्रोड्यूसर्स, म्यूज़िक डायरेक्टर्स और एक्टर्स उनके साथ काम करने के लिए होड़ लगाया करते थे। साल 1977 में आई फिल्म 'किनारा' में लता मंगेशकर 'नाम गुम जायेगा, चेहरा ये बदल जायेगा, मेरी आवाज़ ही, पहचान है, गर याद रहे' गीत गाया। लता मंगेशकर की ये लाइनें उनके हर चाहने वाले को हमेशा याद रहेंगी।उस दौरान उन्होंने बैजू बावरा, मदर इंडिया, देवदास और मधुमति जैसी हिट फिल्मों में गाने गाए। उन्होंने लगभग सभी प्रमुख संगीत निर्देशकों जैसे नौशाद, शंकर-जयकिशन, एस.डी. बर्मन, आर.डी. बर्मन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल और ए.आर. रहमान के साथ काम किया। लता मंगेशकर की आवाज में एक अनोखी कोमलता और भावनात्मक गहराई थी जो हर गीत को जीवंत बना देती थी। चाहे वह रोमांटिक गीत हो, भक्ति भजन हो या देशभक्ति से भरा गाना लता ने हर शैली में अपनी आवाज का जादू बिखेरा। उनकी गायन शैली ने न केवल श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया बल्कि नई पीढ़ी के गायकों के लिए भी एक प्रेरणा बनी।

लता मंगेशकर ने 36 से अधिक भारतीय भाषाओं में लगभग 30,000 से अधिक गाने गाए जो अपने आप में एक विश्व रिकॉर्ड है। लता मंगेशकर केवल एक गायिका नहीं थी बल्कि एक ऐसी संस्था थी जिन्होंने भारतीय संगीत को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उनकी आवाज ने न केवल भारत बल्कि विश्व भर के संगीत प्रेमियों को एक सूत्र में बांधा। लता मंगेशकर का योगदान भारतीय सिनेमा और संगीत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। 6 फरवरी 2022 को उनका निधन हो गया लेकिन उनकी आवाज और गीत आज भी हर संगीत प्रेमी के दिल में आज भी जीवित है।

बेटियों के सम्मान और संकल्प का दिन

डॉटर्सर डे

सैयद असीम अली
समीक्षक

बेटी का जन्म परिवार के लिए एक नई सुबह का उदय होता है। जैसे सूरज की पहली किरण घर में रोशनी भर देती है, वैसे ही बेटी का आगमन हर कोने को खुशी और उत्साह से भर देता है। वह परिवार की धड़कन होती है और समाज को दिशा देने वाली शक्ति भी। उम्मीदों की किरण- अमानह और दुनिया की हर बेटी मासूम मुस्कान, बड़े सपनों और उज्ज्वल भविष्य की तस्वीर हैं। बेटियाँ स्नेह, विश्वास, जिम्मेदारी और संबल की आधारशिला होती हैं। वे कठिनाइयों का सामना करने का साहस देती हैं और प्रेरणा का स्रोत बनती हैं।

हर साल 'डॉटर्स डे' बेटियों के महत्व, उनके योगदान और उनके प्रति भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर देता है। यह सिर्फ औपचारिक शुभकामना का दिन नहीं, बल्कि आत्ममंथन का भी क्षण है कि हम बेटियों के लिए कैसा वातावरण और भविष्य तैयार कर रहे हैं।

बेटी का जन्म परिवार के लिए एक नई सुबह का उदय होता है। जैसे सूरज की पहली किरण घर में रोशनी भर देती है, वैसे ही बेटी का आगमन हर कोने को खुशी और उत्साह से भर देता है। वह परिवार की धड़कन होती है और समाज को दिशा देने वाली शक्ति भी।

उम्मीदों की किरण- अमानह और दुनिया की हर बेटी मासूम मुस्कान, बड़े सपनों और उज्ज्वल भविष्य की तस्वीर हैं। बेटियाँ स्नेह, विश्वास, जिम्मेदारी और संबल की आधारशिला होती हैं। वे कठिनाइयों का सामना करने का साहस देती हैं और प्रेरणा का स्रोत बनती हैं।

भारत का इतिहास रानी लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई फुले, किरण बेदी, नीरजा भनोट, लता मंगेशकर, मैरी कॉम, कल्पना चावला, अरुणिमा सिन्हा और पी. वी. सिंधु जैसी बेटियों के साहस, सेवा और उपलब्धियों से भरा है। ये 'भारत की बेटियाँ' आने वाली पीढ़ियों के लिए सशक्तिकरण का मार्ग आलोकित करती हैं।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, लाड़ली लक्ष्मी, सुकन्या समृद्धि और बालिका समृद्धि जैसी योजनाएँ बालिकाओं के जन्म, शिक्षा और आर्थिक सुरक्षा को बढ़ावा देती हैं। इनसे समाज में बेटी के प्रति सोच भी सकारात्मक हो रही है।

डॉटर डे पर संकल्प- डॉटर डे हमें यह संकल्प लेने की प्रेरणा देता है कि –

बेटियों को शिक्षा के पूर्ण अवसर देंगे।
उनके सपनों को पंख देंगे।
समाज में उन्हें बराबरी और सम्मान देंगे।
उनकी सुरक्षा और स्वतंत्रता को सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे।

बेटियाँ सिर्फ घर की शोभा नहीं, बल्कि समाज की आत्मा और भविष्य की नींव हैं। उनकी संवेदनशीलता और मेहनत समाज में करुणा, सहयोग और नई ऊर्जा का संचार करती है। बेटियों का सम्मान और सशक्तिकरण ही एक सुंदर, न्यायपूर्ण और संतुलित विश्व की सबसे बड़ी गारंटी है।

अमानह और सभी बेटियों के लिए संदेश
प्रिय अमानह और विश्व की सभी बेटियाँ,

तुम्हारा अस्तित्व इस दुनिया को खूबसूरत बनाता है। तुम्हारे भीतर वह शक्ति है जो दुनिया को बदल सकती है। उड़ान भरो, आगे बढ़ो, और यह मत भूलो कि तुम्हारी मुस्कान किसी के लिए जीवन की सबसे बड़ी उम्मीद हो सकती है।

कवितामय अर्पण

बेटी,
तू सुबह की पहली किरण है,
तू घर का मधुर तराना है।
तेरी हंसी में बसा है सारा जहाँ,
तेरी आँखों में भविष्य का अफसाना है।

अमानह और दुनिया की हर बेटी,
तुम्हें सलाम, तुम्हें प्रणाम।
तुम हो तो यह जीवन है,
तुम हो तो यह संसार महान।

स्पर्श

सीमा देवेन्द्र

'मैं आऊगां ना' तब
वो स्पर्श भी याद रहेगा !

कहा था राम ने
और
एक स्पर्श मात्र से
शिला स्त्री बन जाती है !

'मैं आऊंगा ना ' तब
वो स्पर्श भी याद रहेगा

कहा था कृष्ण ने
और वो
काली अंधियारी भादौ की रात
यमुना का तेज उफान
सिर्फ एक स्पर्श के लिए !

मैं अधरों से लगाऊगां ना
तब
वो स्पर्श भी याद रहेगा
और
कृष्ण ने बांसुरी को कभी
अपने से अलग ना की !

कविता

गवैयों से कहें

धर्मपाल महेंद्र जैन

समय के सुर
राग दरबारी में बजने चाहिए थे।
जिन गायकों को
तुमने बुलाया है संयोजक जी
वे बेसुरे हैं, रियाज़ है नहीं
और महफ़िल में आ बैठे हैं।

उस्तादों से कहिए
पहले उन्हें राग जाति सिखाएँ
फिर राग धर्म में पारंगत करें।
आते ही राग हिंसा सिखा देंगे तो
राग संविधान में ऊँचा सुर
नहीं लगा पाएँगे वे।
उनकी क्या, हमारी बदनामी होगी।
उन्हें सिखाइए
चुनाव आयोग की बंदिशें भी
कहीं-कहीं दिखनी चाहिए
गायक-गायिकाओं में।

संयोजकजी, नि सा रे - सा रे
ताधिनता-वाधिनता अब नहीं चलेगा।
कुछ ठाँय-धिनता,
हाय-धिनता होनी चाहिए।
चुनावी संगीत समारोह के सब शो
हाउसफूल जाएँ सुनिश्चित करें।
गवैयों से कहें कि वे
आँकड़ेबाजी के सुर सीखें और
सांजिदों से ताल मिलाएँ।
चुटकुले सुनाने और अदाकारी से
अब महफ़िलें नहीं सजतीं।

भाषा

अमर खनूजा चड्ढा
लेखक साहित्?यकार हैं।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

काम कौड़ी का नी, ने फुरसत घड़ी की नी

व्यंग्य

मोहन वर्मा
लेखक व्यंग्यकार हैं।

अपने मालवा में एक कहावत बड़ी मशहूर है । काम कौड़ी का नी,ने फुरसत घड़ी की नी।यानि करने धरने को भले ही कुछ खास काम ना भी हो मगर फुर्सत ज़रा भी नही है।कुछ लोग तो यहाँ तक भी कहते है क्या करें साब साँस लेने तक की फुर्सत नहीं है । हम फुर्सत में बैठे बैठे ये सोच सोच कर परेशान हैं कि वक्त की कमी का रोना रोते अपने अपने मोबाईल में चौबीस घंटे आँखें गढ़ाये लोग आखिर ढूंढते क्या रहते हैं? करते क्या हैं?

एक समय था जब मोहल्ले पड़ोस में किसी घर पर खुशी का मंगल उत्सव हो या दुःख,परेशानी,या ग़म का मौका । प्राथमिकता उसके दुःख या खुशी में शामिल होने की होती थी । अब अपवादों को छोड़ दें तो पड़ोस में होने वाले उत्सव अवसरों पर सीधे भोजन के लिये निर्धारित गॉर्डन में ही पहुँचा जाता है बाकी भाई तू जान तेरा काम । दुःख मुसीबत में,हारी बीमारी में भी मिजाजपुर्सी के लिए समय ही नहीं हैं आज जाऊँ कल जाऊँ करते करते आप हम सोचते रह जाते है और बीमार या तो आपका इंतज़ार करते ठीक होकर घर आ जाता है या फ़िर अनंत यात्रा पर चला जाता है । कई बार तो मातमपुर्सी तक में जाने का समय नहीं होता लोगों के पास। भले काम कौड़ी का नी हो फुरसत भी घड़ी की नी हैं ।

एक परिचित की बीमारी और उनके अस्पताल में भर्ती होने का समाचार जब उन्हें मिला तो एक दिन मैंने भी उन्हें टोका-तुम्हारे तो खास रहे हैं वो । अस्पताल में भर्ती है..मिल आये? अरे कहाँ..? समय ही नहीं मिल पा रहा है हालांकि यहाँ वहाँ आते जाते मैं उन्हें ठीये पर बैठे बतोलेबाजी करते देखता रहता हूं,मगर उनके झूठ को सच साबित करने वाला मैं कौन?

मौत मय्यत में शामिल होने से बचने के लिये भी अब तो लोग या तो बहाने बनाते है या फिर परिचितों को फोन लगाकर ये टोह लेते है..कितनी देर है..कब ले जायेंगे..यार कहीं फसा हुआ हूँ..या फिर ये कहते फिरते है..जाना तो था..मगर क्या बताऊँ..खैर चलो अब उठावने में हाजिर हो जाऊँगा । फिर चाहे घर पर या उठावने में भी न गये तो कौन पूछने वाला है ? जाने वाला तो चला गया ।

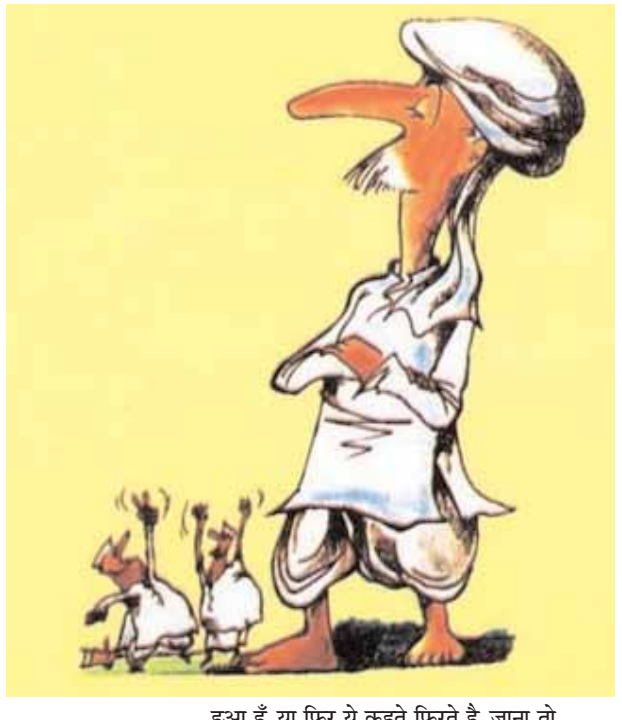

स्वभाव की लापरवाही हो या अपने कामों की प्राथमिकता तय ना करना हो, जरूरी काम टलते रहते हैं और बहाने के लिए बहाना है ही कि घड़ी भर की भी फुरसत नी हैं । समय पर कहीं जरूरी कागज दाखिल करना हो,घर परिवार के जरूरी काम करना हो उसमें भी वही बहाना ..यार फुरसत ही नहीं निकल पा रही है.।

अलसुबह से मोबाईल पर चैट करना हो या उस पर चलते ज्ञान से ज्ञानी बनना हो, वॉट्सप, फ़ेसबुक, इंस्टॉग्राम पर रील बनाना हो,देखते देखते मन ही नहीं भरता । लोग रोड पर इस तरह मोबाईल में आंखें गड़ाए चलते या गाडी चलाते है कि परिणाम हम जानते हैं ।और फिर आज की इस प्राथमिकता के चलते दूसरे कामों के लिये समय ही कहाँ मिल पाता है, फुर्सत हैं कहाँ?

जो लोग रचनात्मक कामों में लगे है या अपने शौक के लिये समय निकालकर लगे रहते है या फिर अपने अपने कामों की प्राथमिकता की लिस्ट बनाकर करते हैं वो कोई बिरले नहीं होते । उनके पास भी हमारी ही तरह वही चौबीस घण्टे होते है फिर समय की कमी का रोना रोते यह कहना कि-समय ही कहाँ मिल पाता है, फुर्सत हैं कहाँ? कहाँ तक उचित है? दरअसल हम मनुष्य है और अपने जरूरी कामों की प्राथमिकता के साथ मनुष्यता भी हमारी प्राथमिकता पर होना चाहिये ।

कला, विंसेंट वॉन गॉग और संघर्ष की दास्तान

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

असफलता ही सफलता की कुंजी है, इस बात से लगभग सभी लोग वाकिफ होंगे। कुछ लोग मानेंगे तो कुछ नहीं मानेंगे। इस मानने न मानने से इतर बस हमें अपने मानने पर भरोसा करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। हमें किसी भी परिणाम से इतर बस कार्य पर ध्यान देना चाहिए। हमें कोई भी कार्य खुद से करके उसके अच्छाई एवं बुराई पर विचार करना चाहिए। कलाकार विंसेंट वॉन गॉग असफलता से सफलता की ओर बढ़ने वाला कलाकार हुआ। उपदेश देने से पूर्व श्रोताओं के दुःख दर्द को महसूस करते हुए आगे बढ़ा। जीवनयापन हेतु तमाम संघर्षों के बावजूद निराश ही होता रहा पर आगे बढ़ता रहा। पागल बेवकूफ का तमगा भी मिला, उसी को लिए लगातार आगे बढ़ने के प्रयास में लगा रहा।

25 वर्ष तक लगभग चार से पांच कामों में असफल होने के बाद विंसेंट को बोरिनोज़ के चर्च में मज़दूरों को उपदेश सुनाने का मौका मिल गया साथ में काम भर का वेतन भी। पादरी बन गया था, अस्थाई नियुक्ति मिली थी। असफलता यहां भी साथ नहीं छोड़ी। कड़कड़ाती ठंड में देंह ऐंठ-ऐंठ जा रही थी जिसे गर्म रखने हेतु कोयले की आवश्यकता थी। इंतजाम कैसे होगा? परेशान था वॉन गॉग, जिस हेतु उसे कोयले के पहाड़ी तक जाना था, वो गया भी। काम भर का कोयला मिल तो गया पर वो वहां के संघर्ष से वाकिफ भी हो गया। लाख छुड़ाने के बावजूद भी कोयले की कुछ काली परतें चेहरे पर जमीं रहीं। ऐसी अवस्था में ही उपदेश देना हुआ था पहली बार वॉन गॉग को। सुनने वाले भी दीन, हीन, निरीह, काले कोयले से सने लोग थे। कोयले वाला उपदेशक उन्हें अपने ही बीच का लगा। लोगों का विश्वास वॉन गॉग पर बैठ गया।

ईश्वर, संघर्ष और जीवन जैसे तमाम गूढ़ रहस्यों को बड़े ही साधारण तरीके से समझाने में कामयाब हो गया था वॉन गॉग। बिल्कुल ही प्रवाह के साथ अपने शब्दों को रखते हुए लोगों को खुद से जोड़ पाने में भी सफल हो गया था पर दूसरों को ज्ञान बांटते-बांटते जल्द ही खुद भी गहरे अंधेरे में कहीं खो गया था। खोह में खोये कोयले की भांति। हीरा भी तो ऐसे ही होता है। किसी ने कहा कि अभी आप पूरे बोरिनोज़ को सही से जान नहीं पाये हैं, यहां के लोगों को ज्ञान से ज्यादा रोटी की आवश्यकता है, शरीर के न भरने वाले खोह को पाटने हेतु आलू की आवश्यकता है, दो जून खाने को कुछ मिल सके उसकी आवश्यकता है। ज्ञान बांटने निकले वॉन गॉग के मन में, उपदेशक को भी श्रोताओं जैसा ही होना चाहिए, जैसा भाव था। कोयले के खदान में उतरने के निश्चय के साथ वो आगे बढ़ा। जिनको उपदेश देना है उनके दुखों को पहले समझना होगा। बीती रात को जबरदस्त ठिठुरन रही, बाहर निकलना ही मृत्यु सा भयावह लग रहा था बावजूद इसके लोग भोर में ही ठिठुरते सिकुड़ते अपने काम पर जा रहे थे। वॉन गॉग भी उतर रहा था। दुख पसर कर वॉन गॉग के कलेजे तक उतर गया था। ढेबरी के रोशनी में लगातार खदान के नीचे उतरते हुए कई दफा सांसों के उखड़ जाने के एहसास से कांप उठना हुआ पर हार नहीं माना।

वो निरंतर नीचे उतरता गया। मृत्यु सिर पर खड़ी दिखाई पड़ रही थी पर उसका उतरना जारी था। मजदूरों को देखकर हौंसला मिलता रहा। मजदूर काले पसीने से नहाए हुए जान पड़ रहे थे। जमीन काली खेती सी जान पड़ रही थी। थूक भी काली आने लगी थी। दूसरों के चेहरे को देखकर वॉन गॉग खुद के चेहरे का अंदाजा लगा चुका था। संकरी बिल्कुल ही संकरी खोह से उतरते हुए अब वो वाकई बोरिनोज़ को जान पा रहा था।

छोटे बिल्कुल छोटे बच्चों को अपने उम्र से पहले बड़े होते देखना और औकात से कई गुना अधिक कष्टों वाले

काम करते देखते हुए दिल पसीज गया उस पसीझते हुए दलदल में। खदान में कमियों का अंबार था, खदान के कभी भी बैठ जाने का खतरा भी था बावजूद इसके भी लोग निरंतर खट रहे थे, पेट और बाल-बच्चों के खातिर। खदान की दशा देख

अंदर तक सिहर उठा वॉन गॉग। किसी तरीके से जिंदा बाहर आने के बाद एकदम बदलाव सा हो गया था उसके व्यवहार में। छोटे बच्चों के कष्टों को देखकर भी वो तड़प उठ रहा था। खदान में मजदूरों की दशा देखकर उनके बीमार एवं बिलखते बच्चों से मिलने के बाद एकदम से तड़प उठा वॉन गॉग। रहन-सहन बिल्कुल ही बोरिनोज़ वालों की तरह एकदम गरीबी में होना चाहिए फलतः रहने का स्थान भी बदल लिया। बिल्कुल ही घटिया पूरे मुहल्ले के लोगों से भी घटिया जगह लेकर रहने लगा ताकि वहां रहने वाले लोगों को वो अपने बीच का लग सके। खदान के मजदूरों की मजबूरी ठेकेदार तक भी पहुंचाया पर उनकी अपनी मजबूरी मुंह बाये खड़ी थी। बिल्कुल ही आपा खो बैठा था वॉन गॉग। अब तक कलाकार बनने की बात नहीं थी। अभी तक वो एक अच्छा इंसान बनना चाह रहा था पर उसके साथ उसका चाहा कभी नहीं हुआ।

अपने लिए बस जरूरत के कपड़े रखते हुए उसने बाकी बचे कपड़ों को ठिठुरन से कांपते जरुरत मंदो में बांट दिया। दिन भर कोयला बीनता, बीन कर ठंढ से तड़पते बच्चों को गर्म करने हेतु भट्ठियों में जलाने के लिए उनके परिजनों को दे देता और खुद सिकुड़ते हुए जीता। अपनी चारपाई भी बिमार बच्चे को देकर खुद घास पर सोने लगा। वॉन गॉग अपने पिता एवं भाई थियो के निगाह में एक सफल इंसान तो नहीं बन पा रहा था पर खुद के नजर में दूसरों के काम आने वाला एक अच्छा इंसान बन गया था। दर्द के अथाह सागर में गोंता लगा रहा था वॉन गॉग पर खुद को बचाने के स्थान पर दूसरों को उभारते हुए खुद और भी गहरा डूबता जा रहा था। अब तक मिले अपने वेतन को भी इन्हीं गरीबों के देखरेख में लगाता रहा। खुद किसी तरीके से काम भर का खा पा रहा था।

एक दिन कोयला बीन ही रहा था कि अंदर से बाहर को बेतरतीब भागती हुई बहुत सारी आकृतियां उसको दीख पड़ीं। अभी तो निकलने का समय भी नहीं हुआ है। ओह! जरूर कोई दुर्घटना हुई है। कई लोगों के न रहने की खबर आई थी। थका हारा वॉन गॉग पेट पकड़ कर वहीं बैठ गया था। काश कि एक दिन की छुट्टी करके सब कुछ पहले ही सही करवा दिया गया होता। एक दिन लोग पानी पीकर ही रह गये होते इतनी जानें तो नहीं जातीं। दुर्घटना के बाद वॉन गॉग का वेतन गांव भर में फिर खप गया। दर्द से तड़पते को दिलाशा देते हुए वॉन गॉग जी भर कर रोया था। उन सभी के कष्टों को दूर करने में लगा हुआ था। बोरिनोज़ का ही होकर रह गया था वॉन गॉग। बोरिनोज़ वालों से इस तरह घुल मिल कर रहना उसके अधिकारियों को बहुत बुरा लगा, पादरी पद को धक्का देने वाला लगा फलतः अधिकारियों द्वारा जल्दी ही उसे पादरी पद से हटा दिया गया। एक बार फिर वॉन गॉग बिना काम के हो गया पर वो अभी भी बोरिनोज़ वालों की सहायता करता रहा अपने सामर्थ्य भर। खाना-पीना भी धीरे-धीरे कम होता गया। बीमारियों से घिरता चला गया। आंखें धंसती जा रहीं थीं। हद से कहीं ज्यादा कमजोर हो गया था वो। समय से पहले ही बूढ़ा दिखने लगा था। धीरे-धीरे वॉन गॉग मजदूरों के काम का भी नहीं रहा। दिन रात भर आसमान निहारता रहता था। कुछ भी समझने में खुद को असमर्थ पा रहा था कि उसने खुद को किताबों डुबो देना तय किया। लगातार पढ़ते-पढ़ते जल्दी ही यहां से भी ऊब गया बिना मंजिल के राही की भांति घूमने निकल गया। घूमते हुए दूर बहुत दूर निकल गया। थक कर दीवार से सटे जगह पर वह बैठ गया। लगातार न समझ सकने वाली बातें सोचता रहा जबकि हाथ वहां खड़े एक बूढ़े व्यक्ति का चित्र बनाने में लगा हुआ था। चित्र तो बहुत अच्छा नहीं था पर भाव डूब कर बनाए कलाकारों जैसा ही था । कुछ समय बाद तो वॉन गॉग दिन-दिन भर खेतों में ही बैठा रहता था। पहली बार वहां के लोग किसानों के जैसे घंटों खेत में बैठ कर चित्रकारी करते किसी को देख रहे थे।

***

लोकमाता नदियां और दुनिया में उनके कानूनी अधिकार

नदी दिवस पर विशेष

श्याम बोहरे

लेखक पर्यावरण मामलों के जानकार हैं।

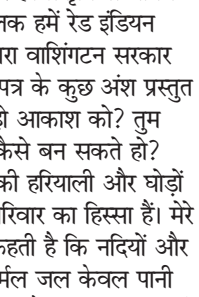

क्या नदियों के बिना मानव जीवन सम्भव है? नदियां प्रकृति का बेशकीमती उपहार हैं। प्रकृति से मानव के रिश्ते कैसे हों इसकी झलक हमें रेड इंडियन कबीलें के चीफ सिएटल द्वारा वाशिंगटन सरकार को लिखे पत्र मे दिखती है पत्र के कुछ अंश प्रस्तुत हैं-तुम कैसे खरीद सकते हो आकाश को? तुम हवा और पानी के मालिक कैसे बन सकते हो? पहाड़ों की चोटियां, मैदानों की हरियाली और घोड़ों के बच्चे यह सब एक ही परिवार का हिस्सा हैं। मेरे पूर्वजों की आवाज मुझसे कहती है कि नदियों और झरनों मे बहता हुआ यह निर्मल जल केवल पानी नहीं बल्कि मेरे पूर्वजों का लहू है। यह नदियां हमारी मित्र हैं। यह हमारी प्यास बुझाती हैं। इनकी लहरों पर खेलती हैं हमारी छोटी-मोटी नावें, और मिटाती है हमारे बच्चों की भूख और प्यास। इसलिए तुम इन नदियों को उतना ही प्यार और दुलार देना जितना तुम अपने सगे भाई को देते हो।

भारत माता की जय क्यों बोलते हैं? इसका मतलब क्या हैं? राष्ट्रीय गीत वंदेमातरम् में कहा गया है - सुजलाम सुफलाम, मलयज शीतलाम। हम उस भारत माता की वंदना करते हैं जहां सुजलाम मतलब साफ सुथरा जल है, सुफलाम जहां अच्छे फल हैं, मलयजशीतलाम मतलब शीतल पवन (हवा) हैं। अच्छा साफ सुथरा जल हमें नदियों से मिलता है। बिना जल के पेड़ पौधे नहीं हो सकते जिनसे हमें अच्छे फल और शीतल पवन मिलते हैं। नदियों के महत्व को देखते हुए ''काका कालेलकर'' ने नदियों को लोकमाता कहा हैं। नदियों ने माता की तरह ही मानव सभ्यताओं का पालन पोषण किया है।

क्या नदियों के बिना मानव जीवन सम्भव है? नदियां प्रकृति का बेशकीमती उपहार हैं। प्रकृति से मानव के रिश्ते कैसे हों इसकी झलक हमें रेड इंडियन कबीलें के चीफ सिएटल द्वारा वाशिंगटन सरकार को लिखे पत्र मे दिखती है पत्र के कुछ अंश प्रस्तुत हैं- तुम कैसे खरीद सकते हो आकाश को? तुम हवा और पानी के मालिक कैसे बन सकते हो? पहाड़ो की चोटियां, मैदानों की हरियाली और घोड़ों के बच्चे यह सब एक ही परिवार का हिस्सा हैं। मेरे पूर्वजों की आवाज मुझसे कहती है कि नदियों और झरनों मे बहता हुआ यह निर्मल जल केवल पानी नहीं बल्कि मेरे पूर्वजों का लहू है। यह नदियां हमारी मित्र हैं। यह हमारी प्यास बुझाती हैं। इनकी लहरों पर खेलती हैं हमारी छोटी-मोटी नावें, और मिटाती है हमारे बच्चों की भूख और प्यास। इसलिए तुम इन नदियों को उतना ही प्यार और दुलार देना जितना तुम अपने सगे भाई को देते हो।

पर्यावरण चेतना भारतीय संस्कृति के मूल में रची बसी है। वैदिक ऋषि प्रार्थना करते हैं कि सभी नदियां हमारे अनुकुल बहें, वायु हमारे अनुकूल बहे, पृथ्वी हमारे अनुकूल हो। अर्थवेद के पृथ्वी सूक्त मे कहा गया है ''हे धरतीमा मैं तुमसे उतना ही लूंगा जिसे तू फिर से पैदा कर सके, तेरी जीवन शक्ति पर कभी आधात नहीं करूंगा। यदि वेदों में हमारी श्रध्दा है तो अपने आप से दो सवाल करें, क्या हम नदियों से उतना ही पानी ले रहे हैं जितना नदियां फिर से पैदा कर सकें? क्या हम नदियों में कारखानों के अपशिष्ट से और नालियों में उतना ही कचरा डाल रहे हैं जितना नदी स्वाभाविक रूप से साफ कर सकती है? यदि इन प्रश्नों पर विचार नहीं कर सकते, उनमे निहित संदेश को ग्रहण करके उस पर अमल नहीं कर सकते तो वेदों को पूजने का पाखण्ड क्यों?

नदियों के महत्व को देखते हुए दुनिया के कई देशों ने नदी और अन्य प्राकृतिक संसाधनों को वैधानिक (कानूनी) अस्तित्व माना है, जिनके अपने वैधानिक अधिकार होते हैं। वैधानिक अधिकार की यह अवधारणा परिस्थितिक न्यायशास्त्र से उभरी है। प्रकृति के अधिकारों के लिए हुए आन्दोलनों के दवाब से विकसित हुआ है। नदियों के कानूनी अधिकार दुनिया के कुछ देशों में स्वीकार किये गए हैं उनके कुछ उदाहरण देखते हैं

1- **न्यूजीलैण्ड** – वानगन्यू नदी पहली नदी है जिसे नागरिकों के अधिकारों की तरह कानूनी अस्तित्व मिला है। मावरी आदिवासीयों मे 140 साल के प्रयासों सेवा नगन्यूईवी को यह दर्जा मिला है।

कानून नदी को एक नागरिक की तरह पहचान देता है, जो अपने कानूनी पालकों के संरक्षण में रहती है नदी का ख्याल रखने के लिए वैधानिक पालक नियुक्त किए जाने का कानूनी प्रावधान किया गया है। जरूरत पड़ने पर वैधानिक पालक अदालत में नदी का पक्ष रखने के लिए अधिकृत है।

2. **भारत** – उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय ने 2017 मे गंगा और यमुना नदी को जीवित पक्ष माना है। यद्यपि सर्वोच्च न्यायालय ने उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय के इस फैसले पर रोक लगा दी है। जिसके कारण यह विवाद ग्रस्त बन गया हैं। कुछ भी हो नदियों को कानूनी अधिकार मिलने के विचार की पहल तो हो गई।
3. **कोलम्बिया** – कोलम्बिया की संवैधानिक अदालत ने 2016 में अटराटो नदी के कानूनी अस्तित्व को मान्यता दी हैं। नदी के परिस्थिकीतंत्र (ईकोसिस्टम) और स्थानीय समुदाय की परस्पर निरर्भता को मान्यता देते हुए न्यायालय ने सरकार को आदेश दिया। नदी को माइनिंग (खनिज उत्खनन) और प्रदूषण से बचाया जाये।
4. **बांग्लादेश** – बांग्लादेश ने 2019 में देश की सभी नदियों के अधिकारों को नागरिक अधिकार घोषित कर दिये है। इस कानूनी अधिकार ने सरकारी अधिकारियों को अधिकार दिए हैं, कि नदियों के प्रदूषण और अतिक्रमण के मामले में कठोर कार्यवाही करे।
5. एक्वाडोर - **दुनिया में सबसे पहले 2008 में एक्वाडोर** के संविधान ने प्रकृति के कानूनी अधिकारों को स्पष्ट मान्यता दी है। जिन्हे वहां पंचामामा कहते हैं। केवल कोई विशिष्ट नदी ही नहीं वरन समूचे पारिस्थितिकतंत्र और सभी नदियों के संरक्षण के लिए सवैधानिक प्रावधान उपलब्ध कराये हैं, जिससे नदियों और पारिस्थितिकतंत्र का प्रदूषण और विनाश से बचाने के लिए न्यायालय में जाकर कार्यवाही की जा सके।
6. **संयुक्त राष्ट्र अमेरिका** – अमेरिका मे कुछ नगर पालिकाओं ने प्रकृति और नदियों के वैधानिक अधिकारो को मान्यता देने के संबंध में अध्यादेश जारी किए हैं। उदाहरण के लिए 2019 मे ओहियो के टोलिडो ने इरी जलाशय के कानूनी अधिकार का विधेयक (बिल) पास किया। यधपि यह विधेयक कानूनी चुनौतियों का सामना कर रहा है। फिर भी वैचारिक स्तर पर औपचारिक शुरूआत तो हुई। 2019 केलीफोर्निया के योर्क आदिवासियों ने आदिवासी कानून के अंतर्गत कलमथ नदी को वैधानिक व्यक्ति की मान्यता प्रदान की।

इस तरह हम देखते हैं कि दुनिया के कुछ देशों ने इस अधिकारों के लिए पहल तो की। बात निकली है दूर तलक जायेगी। ब्रिटिश कोलम्बिया के पर्यावरणविद मार्क एन्जिलो नदियों के संरक्षण के लिए दुनिया भर मे जाने जाते हैं। जिन्दगी के लिए पानी का दशक कार्यक्रम के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र संघ को नदियों के लिए वैश्विक उत्सव मनाने का सुझाव दिया। जीवन के लिए उपयोगी नदियों के संरक्षण और उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता विकसित करने के उददेश्य से विश्व रिवरडे (विश्व नदी दिवस) मनाने के प्रयास किए। मार्क एन्जिलो के सुझाव पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 29 जून 2005 को प्रतिवर्ष सितम्बर माह के चौथें रविवार को विश्व नदी दिवस मनाने की घोषणा की है। तब से दुनिया के 100 से अधिक देशों में करोड़ो लोग इसे मनाते हैं।

पहले अरशद , फिर अक्षय और अब दोनों, डबल धमाका

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

सफल श्रृँखलाबद्ध फिल्मों का जब भी ज़िक्र होता है जॉली एल-एल बी फिल्म श्रृँखला का जिक्र ज़रुर होता है । इस फिल्म के जॉली एल-एल बी शीर्षक से दो फिल्में बन चुकी है। वर्ष 2013 में बने पहले संस्करण में अरशद वारसी ने वकील की केन्द्रीय भूमिका निभाई थी जो जबर्दस्त रही थी । वर्ष 2017 के दूसरे संस्करण में अरशद के स्थान पर अक्षय कुमार को मुख्य भूमिका दी थी वो भी सफल रहे थे मगर अरशद को न लिये जाने पर वो खफा थे ,उनका आक्षेप था प्रोड्यूसर को स्टार चाहिये । इसी महीने रिलीज फिल्म के तीसरे दृश्यों की घनघोर नाटकीयता , महिला चरित्रों का कमजोर लेखन? और नीरस संगीत संयोजन फिल्म के कमजोर पक्ष हैं । इस संस्करण की कहानी एक किसान परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है। एक किसान अपनी जमीन बचाने की कोशिश करता है, लेकिन दबंग ताकतों और भ्रष्ट नेताओं की वजह से वह आत्महत्या कर लेता है। उसकी विधवा (सीमा बिस्वास) न्याय के लिए अदालत में जाती है। कोर्टरूम में पहले जॉली मिश्रा (अक्षय कुमार) और जॉली त्यागी (अरशद वारसी) अलग-अलग पक्षों में आमने-सामने होते हैं। फिर आगे जाकर उन्हें एक साथ काम करना पड़ता है, जिससे बहस और मजेदार हो जाती है। फिल्म में हास्य और व्यंग्य के साथ किसानों के मुद्दे को भी दिखाया गया है। कहानी का मुख्य संदेश है - 'जय जवान, जय किसान', जो किसानों और सैनिकों की अहमियत को बताता है।

जॉली मिश्रा और जॉली त्यागी के रूप में अक्षय कुमार और अरशद वारसी अपने-अपने

संस्करण में निर्देशक ने अरशद वारसी और अक्षय कुमार दोनों को लेकर डबल धमाका किया है । इन दो धाकड़ अभिनेताओं के साथ सौरभ शुक्ला तो है ही।

निर्देशक सुभाष कपूर ने इस संस्करण में अपने लोकप्रिय न्यायालयीन दृश्यविधान में और भी बेहतर किया है । इस संस्करण में अक्षय कुमार - जॉली मिश्रा की भूमिका में और अरशद वारसी जॉली त्यागी की भूमिका में एकदम उपयुक्त और लाज़वाब है ।अक्षय कुमार और अरशद वारसी जब एक ही अदालत में भिड़ते हैं तो हास्य, व्यंग्य और भावुकता के साथ सामाजिक सरोकारों का ऐसा खाका खिंचता है कि दर्शक मुग्ध हो जाते हैं ।अक्षय और अरशद की अभिनय की दक्षता का mm ,सीमा बिस्वास का भावपूर्ण अभिनय, राम कपूर की मजबूत वकालत और गजराज राव का दमदार भ्रष्ट कारोबारी की भूमिका , यह सभी तत्व फिल्म को देखने लायक बनाते हैं। हालांकि, पुराने अंदाज़ में दिखते हैं। कहानी भी सीधी -सच्ची है । फिल्म का पहला हिस्सा तो ठीक ठाक है , यद्यपि इंटरवल से ठीक पहले का निर्णायक मोड़ वाला दृष्य , जिस जबरदस्त इम्पैक्ट के साथ दिखाना था वहाँ निर्देशक असफल रहे हैं। इसके बाद दूसरे भाग में ज़रुर सुलझती लगती है और अंततः न्याय मिलता है । निर्देशक ने कोर्टरूम ड्रामा को व्यंग्य और हास्य के साथ कसकर पेश किया है। अक्षय और अरशद की जुगलबन्दी को भी उन्होंने बरकरार रखा है और किसानों के मुद्दे को संवेदन शील ढंग से जोड़ा भी है । कैमरे का इस्तेमाल और डायलॉग्स की धार दर्शकों को कोर्टरूम का हिस्सा बना देते हैं। हालांकि, इमोशनल हिस्सों में जरूरत से ज्यादा मेलोड्रामा और कमजोर संगीत फिल्म की कमजोरी साबित हुए। फिर भी सामाजिक संदेश और मनोरंजन का मेल बिठाने में फिल्म सफल रही है।

टाइगर ऑफ स्काई की गौरवपूर्ण विदाई

मिग 21

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
लेखक स्तंभकार हैं।

चण्डीगढ़ के एयरबेस से मिग-21 की आखरी उड़ान के साथ मिग की विदाई केवल एक सुपरसोनिक फाइटर की विदाई नहीं है अपितु भारतीय वायु सेना के फाइटर बेडे से मिग की गौरवशाली अतीत की विदाई है। अपनी गति, शक्ति और मारक क्षमता के कारण नाम से ही दुश्मनों में दहसत बनाने वाले मिग-21 अपनी यात्रा के 62 वर्ष पूरे कर विदा हो रहा है। 1962 के युद्ध के कटु अनुभवों के बाद भारत ने अन्य विकल्प होते हुए भी सोवियत रुस के मिग-21 को प्राथमिकता दी। 1963 में चण्डीगढ़ में ही मिग ने भारतीय वायु सेना में प्रवेश किया और 26 सितंबर, 2025 को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह व सेनाप्रमुखों के बीच औपचारिक विदाई ली है। स्क्वाड्रनलीडर प्रिया सिंह ने अंतिम उड़ान भर कर मिग-21 को शानदार-यादगार विदाई दी। मिग-21 का 1965, 1971, करगिल, बालाकोट और ऑपरेशन सिन्दुर तक गौरवशाली इतिहास रहा है।

हालांकि मिग-21 के उड़ान के दौरान हुई दुर्घटनाओं ने इसे उड़ता ताबूत ही नहीं विडो मेकर तक कहा जाने लगा। दरअसल पाकिस्तान से युद्ध के दौरान अमेरिका के एफ-16 युद्धक विमान को गिरा कर सारी दुनिया को इसने आश्चर्य में ड़ाल दिया था। 1971 में ढ़ाका में गर्वनर हाउस पर बमबारी कर अपनी मारका क्षमता का लोहा मनवा चुका है। भारतीय वायु सेना में 800 से अधिक मिग का बेड़ा रहा है। इनमें से करीब 400 मिग के दुर्घटनाग्रस्त होने और करीब 200 पायलट और 50 नागरिकों की मौत के कारण गति, शक्ति और रफ्तार के बावजूद मिग-21 को उड़ता ताबूत कहा जाने लगा। यह दूसरी बात है कि कुछ दुर्घटनाएं मानवीय भूल के कारण हुई तो कुछ अन्य कारणों से।

मिग-21 सुपर सोनिक फाइटर विमान का निर्माण सोवियत रुस द्वारा 1950 के दशक के दौरान आरंभ किया और मिग की पहली उड़ान 1955 में हुई। 1962 के युद्ध के अनुभवों के कारण भारत को अपनी वायुसेना को मजबूत बनाने की आवश्यकता महसूस हुई। अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को एफ-16 विमानों की आपूर्ति के कारण भारत को भी अपनी वायुसेना को वेल इक्विप्ड करने की आवश्यकता महसूस हुई और अमेरिका सहित अन्य देषों के फाइटर विमानों के विकल्प होने के बावजूद भारत ने सोवियत रुस के मिग फाइटर विमान खरीदने को पाथमिकता दी। हालांकि 1965 के युद्ध में मिग का सीमित योगदान रहा पर 1971 के युद्ध की तो भाषा ही मिग फाइटर ने बदल कर रख दी। अमेरिका के एफ-16 विमानों को मारगिराकर मिग विमानों ने ना केवल अपनी मारक क्षमता का प्रदर्शन किया अपितु दुनिया के देशों को दांतों तले अंगुली दबाने को मजबूर कर दिया। हालिया ऑपरेशन सिन्दुर में भी मिग विमानों ने महत्वूपर्ण भूमिका निभाई है।

मिग-21 अपनी उड़ान क्षमता, तेजी से आकाश में उंचाई पर जाने, ध्वनी से भी तेज गति से उड़ाने भरने और निशाने पर निशाना साधनें में सफल रहा है। दुश्मन देष तो मिग के नाम से दहसत खाने लगे थे। मिग-21 छोटे रनवे, कठिन हालातों में भी उड़ान भरने में सक्षम रहा है। अचानक हमले के हालातों में भी यह भरोसेमंद रहा है। सूई की नोक जैसे इस विमान में तापमान की समस्या के बावजूद इस विमान की उड़ान भरने में वायुसेना फाइटर गौरव महसूस करते रहे हैं। 2021 के बालाकोट के दौरान भी इसने अपने शौर्य का प्रदर्शन किया। इसमें कोई दो राय नहीं कि दुनिया के 60 से अधिक देशों में मिग ने अपने पराक्रम को दिखाया पर मिग के निर्माता सोवियत रुस से ही मिग की विदाई सबसे पहले आरंभ हुई। रशिया ने 1990 से ही मिग की विदाई आरंभ कर दी। चीन, पौलेण्ड, बुल्गारिया, रोमानिया, चेकस्लोवाकिया, क्रोएशिया, हंगरी आदि इसे विदाई दे चुके हैं। हालांकि सीरिया, उत्तर कोरिया औद अफ्रिकी देशों में मिग सेना के हिस्से बने हुए हैं। भारत में मिग का लंबे समय का कार्यकाल रहा है। फ्लाइंग काफिन जैसे नाम से बदनामी के बावजूद अपग्रेडेड मिग का भारतीय सेना में उपयोग होता रहा। निशाने पर लक्ष्य को साधने में सक्षम होने के बावजूद जिस तरह से इसके क्रेस होने की गति रही है उससे यह बदनामी का भी प्रमुख कारण रहा है। और यही कारण है कि मिग-21 की गौरवपूर्ण प्रदर्शन के बावजूद अंततोगत्वा 62 साल की लंबी यात्रा के बाद इसे सम्मानपूर्वक विदाई दी गई है। देखा जाएं तो मिग ने भारतीय सेना में अपनी गौरवपूर्ण सेवाएं दी और भारतीय सैनिकों ने युद्ध के दौरान इसका जिस तरह से उपयोग किया वह भारतीय सेना के गौरव को बढ़ाने वाला रहा। यही कारण है कि मिग को गौरवपूर्ण समारोह में विदाई दी गई। जहां से इसकी शुरुआत हुई वहीं से इसको विदाई दी गई। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने विदाई समारोह में कहा कि भारतीय वायु सेना के इतिहास में मिग की सेवाओं को स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। मिग को भारत और रुस के बीच संबंधों से भी जोड़ के देखा जाता रहा है।

खासबात यह कि उड़ता ताबूत कहलाने के बावजूद भारतीय वायु सेना में मिग ने 60 वर्ष से भी अधिक समय तक अपने सामर्थ्य से देश के जरुरत के समय अपेक्षाओं पर खरा उतरा। युद्ध या यौद्धिक गतिविधियों के दौरान मिग गैम चैंजर सिद्ध हुआ है। यही कारण है कि मिग को रिटायरमेंट की गौरवपूर्ण विदाई दी गई। अब भारतीय वायु सेना में स्वदेशी फाइटर तेजस मिग का स्थान लेगा। सुखाई, राफेल और तेजस आदि की उपस्थिति से आज भारत की वायुसेना दुनिया की सबसे सक्षम और ताकतवर सेनाओं में से एक है। भले ही भारतीय वायु सेना के बेडे से मिग की विदाई हो गई है पर 1971 का युद्ध, करगिल, बालकोट, ऑपरेशन सिन्दुर और इसी तरह के अभियानों की चर्चा होगी तो मिग की गौरवपूर्ण सेवाओं को सम्मान के साथ याद किया जाएगा।

मातृशक्ति के सैलाब से मालवा की वैष्णो देवी दिग्ठान वाली माता के दरबार में दिखा आस्था का महाकुंभ

पिपलिया से सप्त नदियों का जल ले कर चुनरी कलश यात्रा पहुंची मालवा की वैष्णों देवी के दरबार में

(राजेश शर्मा -धार)

हिलौरे लेती श्रद्धा , आस्था का समंदर सा दृश्य.. दिग्ठान की पावन धरा पर 27 सितम्बर की पावन तिथि बरसों-बरस याद रहेंगी। माता भक्तों और मातृशक्ति के उमड़े सैलाब से मालवा की वैष्णों देवी दिग्ठान वाली माता के दरबार में आस्था के महाकुंभ सा नजारा दिखाई दिया। हजारों-हजार मातृशक्ति सिर पर कलश धारण किए मानों आस्था का नया इतिहास लिख रही थी। कचहरी पिपल्या से निकलने वाली यह भव्य- दिव्य चुनरी कलश यात्रा हजारों मातृशक्तियों की दिव्य उपस्थिति से पुरे धार जिले में प्रसिद्ध है। मालवा की वैष्णो देवी के रूप में विख्यात दिग्ठान वाली माता के भक्त मालवा- निमाड और प्रदेश ही नही वरन् देश भर में है। नवरात्रि पर माता रानी के प्रति आस्था और भक्ति देखते ही बनती है।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी यह भव्य चुनरी कलश यात्रा 27 सितम्बर, शनिवार को कचहरी पिपल्या से मालवा की वैष्णो देवी दिग्ठान वाली माता के दरबार में सप्त नदियों के जल कलश लेकर मातृशक्ति ने माता रानी को चुनरी अर्पित कर सुख समृद्धि की कामना की।

चुनरी कलश यात्रा संयोजक - आयोजक समाजसेवी समंदर सिंह पटेल के नेतृत्व में निकली इस भव्य चुनरी कलश यात्रा में पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, पूर्व कैबिनेट मंत्री राजवर्धनसिंह दत्तीगांव , भाजपा जिलाध्यक्ष नीलेश भारती , धार विधायक नीना वर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार मेडा, जिला पंचायत उपाध्यक्ष प्रतिनिधि हेमसिंह पटेल, पूर्व सांसद गजेंद्रसिंह राजूखेड़ी, मंदिर पुजारी पंडित जितेंद्र जोशी, पूर्व जिला पंचायत उपाध्यक्ष कल्याण पटेल , समाजसेवी अशोक शास्त्री, सर्व ब्राह्मण समाज कार्यकारी जिलाध्यक्ष धर्मेन्द्र जोशी , समाजसेवी नवीन गर्ग, समाजसेवी मनीष महाजन, वरिष्ठ पत्रकार राजेश शर्मा, जिला पंचायत सदस्य गायत्री पुरोहित, डा. तरुण जोशी, जिला भाजपा महामंत्री प्रकाश धाकड़ , भाजपा नेता उमेश गुप्ता , रामप्रसाद रघुवंशी दरबार , पंडित अक्षय तेनगुरिया, गोटू शुक्ला , देवकरण जाट, अजय चौधरी, सुनील दौराया, लव प्रजापत, अजय ठाकुर ,लखन देदला विजय गोस्वामी, मेहताब सिंह ,अवध द्विवेदी, राजेश राठौर ,पवन अग्रावत ,दीपक शर्मा, गेंदालाल बमनका, सरपंच विक्रम सिंह , संजय पटेल , राजा ठाकुर , लक्की उस्ताद कचहरी पिपलिया एवं आसपास के क्षेत्र एवं कई गांवों से हजारों माता भक्त उपस्थित रहे।

आस्था - उल्लास के साथ युवतियां परिसर में माता की आराधना करते हुए गरबा नृत्य कर रही थी...

चुनरी कलश यात्रा का एकत्रीकरण पिपलिया राम मंदिर परिसर मे हुआ । बड़ी संख्या में प्रातः से ही मातृशक्ति एवं माता भक्तों का आना प्रारंभ हो गया था। आस्था -भक्ति के साथ युवतियां परिसर में माता की आराधना करते हुए गरबा नृत्य कर रही थी। पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, धार विधायक नीना वर्मा के साथ चुनरी कलश यात्रा संरक्षक समंदर सिंह पटेल ने सपत्नीक श्री राम मंदिर मे पूजन अर्चन कर सप्त नदियों के जल से भरे कलशों की पूजा कर कलश यात्रा को प्रारंभ किया। यात्रा के साथ आगे आगे बैंड, ढोल, बग्घी के साथ डीजे से लोक गायक शशांक तिवारी कुंदनपुर के भजनों की प्रस्तुति पर माता भक्त झूम उठे।

100 स्थानों पर हुए भव्य स्वागत से सड़के फूलों से पट गई थी। कचहरी पिपलिया से दिग्ठान तक माता भक्तों ने पुष्प वर्षा कर यात्रा की अगवानी की। यात्रा संयोजक , समाजसेवी समंदर सिंह पटेल ने बताया कि इस वर्ष भव्य चुनरी कलश यात्रा में 7 पावन नदियों का जल कलश में भर कर मालवा की वैष्णो देवी - दिग्ठान वाली माता जी के दरबार में मां को चुनरी अर्पित की गई।

सेवा पखवाड़ा अंतर्गत उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

बैतूल। मध्यप्रदेश शासन के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग विभाग के निर्देशानुसार 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक जिले में सेवा पखवाड़ा अभियान संचालित किया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य समाज में स्वच्छता, सेवा एवं सामुदायिक जागरूकता को बढ़ावा देना है। सेवा पखवाड़ा अभियान के तहत 27 सितंबर को नेहरू युवा केंद्र के सहयोग से जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र बैतूल द्वारा उद्यमिता जागरूकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र बैतूल के सहायक प्रबंधक विपिन खोशी ने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, उद्यमिता विकास, स्टार्ट-अप नीति 2025 तथा उद्यमियों को मिलने वाले विभिन्न प्रोत्साहनों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि शासन की योजनाओं का लाभ लेकर लोग अपने व्यवसाय का विस्तार कर सकते हैं और नए रोजगार के अवसर सृजित कर सकते हैं। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को शासन की योजनाओं के प्रति जागरूक किया गया और उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया।

पिछले 24 घंटे के दौरान 8.0 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज

बैतूल। जिले की औसत वर्षा 1083.9 मि.मी. है तथा जिले में अभी तक 952.7 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है, जबकि गत वर्ष इस अवधि तक 1001.6 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई थी। जिले में 27 सितंबर 2025 को प्रात: 8 बजे समाप्त 24 घंटों के दौरान 8.0 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख ने बताया कि 27 सितंबर 2025 को प्रात: 8 बजे तक तहसील बैतूल में 14.2, घोड़ाडोंगरी में 21.0, चिचोली में 10.2, शाहपुर में 18.0, मुलताई में 0.0, प्रभात पट्टन में 3.2, आमला में 6.0, भैंसदेही में 2.0, आठनेर में 0.0 तथा भीमपुर में 5.0 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है।

डेढ़ साल के बच्चे को सड़क पर छोड़ बांध में कूदे दम्पत्ति की मौत

● एसडीईआरएफ की टीम ने 2 घंटे की मशक्कत के बाद निकाले शव
● तीन साल पहले की थी लव मैरिज

बैतूल। पारिवारिक कलह का अंत कितना भयानक होता है इसका अंदाजा एक दम्पत्ति के द्वारा उठाए गए कदम से आसानी से लगाया जा सकता है। दम्पत्ति ने अपने डेढ़ वर्षीय दुधमुंहे पुत्र को सड़क पर छोड़कर बांध में छलांग लगा दी, जिससे दोनों की डूबने से मौत हो गई। घटना मुलताई ब्लाक के बूकाखेड़ी बांध की है। घटना के बाद परिवार में मातम पसर गया है। परिजनों ने बताया कि शादी के बाद घरेलू कलह के चलते दोनों में विवाद होने लगा था।

पैदल गए बांध तक - प्राप्त जानकारी के अनुसार शुभम करदाते उम्र लगभग 25 वर्ष तथा रोशनी उम्र 23 वर्ष का आपसी विवाद होने पर शुक्रवार रात को भी दोनों में झगड़ा हुआ। इसके बाद शनिवार सुबह 9 बजे वे गांव से पैदल निकलकर छिंदवाड़ा मार्ग पर स्थित बूकाखेड़ी बांध के पुल पर पहुँचे और बांध में कूदकर आत्महत्या कर ली। इस दौरान शुभम ने अपने मामा मुन्ना परिहार निवासी हतनापुर को फोन करके बच्चे को ले जाने का कहा। मुन्ना परिहार के बांध के समीप पहुंचते ही उन्होंने बच्चे को सड़क पर छोड़कर पुल पर से बांध में छलांग लगा दी। उन्होंने तत्काल ग्रामीणों को इसकी सूचना दी।

एसडीईआरएफ ने निकाला शव - ग्रामीणों द्वारा घटना की सूचना तत्काल पुलिस को दी गई। सूचना पर पुलिस एसडीईआरएफ की टीम को लेकर मौके पर पहुंची। इसके बाद टीम द्वारा सर्चिंग अभियान चलाकर लगभग 2 घंटे की मशक्कत के बाद दोनों के शव बांध से निकाले गए।महिला का शव पहले बरामद हुआ। पुलिस और गोताखोरों की टीम को काफी तलाश के बाद युवक का शव भी मिल गया। मुलताई थाना प्रभारी देवकरण डेहरिया ने बताया कि मृतक शुभम एवं रोशनी का प्रेम विवाह लगभग 4 वर्ष पूर्व हुआ था, उनका डेढ़ वर्ष का पुत्र भी था। पारिवारिक कलह के चलते संभवत: दंपत्ति ने आत्मघाती कदम उठाया। पुलिस द्वारा शवों को मुलताई अस्पताल लाकर पोस्टमार्टम कराया गया। जिसके बाद परिजनों को शव सौंपकर मर्ग कायम कर पूरे मामले की जांच की जा रही है।

विश्व नदी दिवस पर विशेष

नदी तू निर्मल बहती रहना

राजकुमार सिन्हा
बरगी बांध विस्थापित एवं प्रभावित संघ

भारत की संस्कृति में नदियां जीवनदायिनी है।अन्नजल देने वाली इन नदियों को मां मानकर पूजा जाता है। नदियों के बिना मानव जाति के विकास की परिकल्पना असंभव थी। नदियों ने मानव जाति के साथ सहानुभूतिपूर्ण रवैया अपनाकर मानव जाति के विकास में पूरा सहयोग किया। उसकी दैन्दिनी की हर जरूरत को पूरा किया। हमारे ऋषि जानते थे कि पृथ्वी का आधार जल और जंगल है। इसलिए उन्होंने पृथ्वी की रक्षा के लिए वृक्ष और जल को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा है- 'वृक्षाद् वर्षति पर्जन्य- पर्जन्यादन्न सम्भव' अर्थात् वृक्ष जल है, जल अन्न है, अन्न जीवन है। हिन्दुओं के चार वेदों में से एक अथर्ववेद में बताया गया है कि आवास के समीप शुद्ध जलयुक्त जलाशय होना चाहिए। जल दीर्घायु प्रदायक, कल्याणकारक, सुखमय और प्राणरक्षक होता है। शुद्ध जल के बिना जीवन संभव नहीं है। यही कारण है कि जलस्रोतों को बचाए रखने के लिए हमारे ऋषियों ने इन्हें सम्मान दिया। पूर्वजों ने कल-कल प्रवाहमान सरिता गंगा को ही नहीं वरन सभी जीवनदायनी नदियों को मां कहा है। परंपरागत समय में मानवजाति ने नदियों के इस आत्मीय सहयोग को पूरा मान-सम्मान दिया किन्तु आज लोभ और लाभ की मनोवृत्ति की वजह से नदियां संकट में है।

भारत को नदियों का देश माना जाता है तथा यहाँ छोटी और बड़ी नदियों को मिलाकर लगभग 4000 से अधिक नदियां है। देश में 521 नदियों के पानी की निगरानी करने वाले प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक देश की 198 नदियां ही स्वच्छ हैं। इनमें अधिकांश छोटी नदियां हैं। शहरीकरण, औद्योगीकरण तथा अनियोजित विकास के कारण पिछले कुछ दशकों से नदियों की स्थिति अत्यंत चिंताजनक होती जा रही है। कई सहायक नदियों का अस्तित्व ही समाप्त हो गया है। नदियों के विनाश में बाजारवाद का बढ़ता प्रभाव भी एक प्रमुख कारक है । दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन के चलते नदियों के स्रोत सूखने लगे हैं और नदियां सिकुड़ने लगी है।सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) की ओर से 5 जून 2024 को पर्यावरण दिवस के मौके पर जारी स्टेट ऑफ एनवायरमेंट (एसओई) रिपोर्ट 2023 में यह खुलासा किया कि देश के 30 राज्यों में कुल 279 (46 फीसदी) नदियां प्रदूषित हैं।एसओई रिपोर्ट के मुताबिक देश की 279 अथवा 46 फीसदी प्रदूषित नदियों में सर्वाधिक प्रदूषित नदियां महाराष्ट्र (55) में हैं जबकि इसके बाद मध्य प्रदेश में 19 नदियां प्रदूषित हैं वहीं, बिहार में 18 और केरल में18 नदियां प्रदूषित हैं। उत्तर प्रदेश में 17 और कर्नाटक में 17 नदियां जबकि राजस्थान में 14 और गुजरात में 13, मणिपुर में 13, पश्चिम बंगाल में 13 नदियां प्रदूषित हैं।नदी के पानी का औद्योगिक प्रदूषण भारत में एक गंभीर पर्यावरणीय चुनौती है, जो पारिस्थितिकी तंत्र, सार्वजनिक स्वास्थ्य और आजीविका को गंभीर रूप से प्रभावित करता है।

तेजी से बढ़ते औद्योगिकीकरण और अपर्याप्त अपशिष्ट प्रबंधन के कारण खतरनाक अपशिष्ट नदियों को दूषित कर रहे हैं, जिससे पानी की गुणवत्ता में गिरावट आ रही है। जिससे मछलियां विलुप्त हो रही है।मछली जलीय पर्यावरण पर आश्रित जलीय जीव है तथा जलचर पर्यावरण को संतुलित रखने में इसकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है।जिस पानी में मछली नहीं हो तो निश्चित ही उस पानी की जल जैविक स्थिति सामान्य नहीं है। वैज्ञानिकों द्वारा मछली को जीवन सूचक (बायोइंडीकेटर) माना गया है।कई दूषित नदियों में जैविक ऑक्सीजन की मांग (बीओडी) का स्तर निर्धारित सीमा से 10 गुना अधिक है।मत्स्याखेट की सुरक्षा के लिए नदियों को बहते रहना और प्रदूषणमुक्त रखना भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है।

नदियों में प्रदूषण का असल खमियाजा तो कृषि क्षेत्र पर पड़ता है। प्रदूषित नदियों के जल से सिंचाई होती है और इससे प्रदूषण उस कृषि भूमि पर पहुंच जाती है जहां से सीधे खाद्यान्न आता है। अब एक तरफ तो पैदावार बढ़ाने के लिए किसान खतरनाक उर्वरक इस्तेमाल करते हैं और दूसरी तरफ प्रदूषित नदियों का जल उसे और अस्वास्थ्यकर बनाता है। नदी में अनियंत्रित रेत खनन से नदी के वनस्पतियों और जीवों पर बहुत बुरा असर पड़ता है। रेत खनन जैसे मौजूदा हमले नर्मदा बेसिन को खोखला बना रहा है।बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय के सरोवर विज्ञान ने नर्मदा के तटीय क्षेत्रों पर किए गए अध्ययन में बताया है कि नर्मदा के तटीय क्षेत्र जो कभी 500 से1000 मीटर तक हुआ करते थे, वे अब सिमटकर बिलकुल किनारे तक आ गए हैं। रेत का इस्तेमाल कई गुणा बढ गया है, इसलिए रेत खनन के कारण पर्यावरण पर हो रहे असर की व्यापकता को देखते हुए इसे लघु नहीं, बल्कि प्रमुख खनिज में शामिल कर सख्त पर्यावरणीय अनुमति का प्रावधान किया जाना चाहिए। वर्तमान दौर में नदियां कम्पनियों, कॉर्पोरेट्स और सरकार के मुनाफा कमाने का साधन बन चुकी है। नदियों का प्रशासकीय प्रबंधन की जगह पर्यावरणीय प्रबंधन की दृष्टी से निगरानी तंत्र विकसित करना चाहिए। जिसमें पारिस्थितिकीय तंत्र, जलवायू परिवर्तन और जैव विविधता की समझ रखने वाले विशेषज्ञ को शामिल किया जाना आवश्यक है।

नदियों के स्वास्थ्य को बहाल करने के लिए बांधों और अवरोधों को हटाना अब एक तेजी से स्वीकार किया जा रहा उपाय बन चुका है, और इसमें खास तौर पर यूरोप और उत्तर अमेरिका में तेजी आई है, जहां पुराने, असुरक्षित, अनुपयोगी या आर्थिक रूप से अलाभकारी बांधों को हटाया जा रहा है। जुलाई 2023 में यूरोपीय संसद ने 'नेचर रिस्टोरेशन लॉ' पारित किया, जिसके तहत 2030 तक 25,000 किलोमीटर लंबी नदियों को बाधारहित बनाना अनिवार्य कर दिया गया है। न्यूजीलैंड की संसद ने वहां की तीसरी सबसे बड़ी नदी वांगानुई को एक व्यक्ति की तरह अधिकार दिया है। भारत के आदिवासी भी अपने आसपास की नदियों को अपना पूर्वज मानते हैं। भारत में उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने गंगा और यमुना नदियों को 'जीवित इकाई' का दर्जा दिया है। इसका मतलब है कि इन नदियों को कानूनी व्यक्ति माना जाएगा और उनके संरक्षण के लिए मनुष्यों के समान अधिकार और कर्तव्य होंगे। यह फैसला 20 मार्च, 2017 को दिया गया था। उच्च न्यायालय ने अपने फैसले में कहा कि गंगा और यमुना नदियां, उनकी सभी सहायक नदियां और उनसे निकलने वाले ग्लेशियर, सभी को कानूनी व्यक्ति माना जाएगा। इसका मतलब है कि इन नदियों को नुकसान पहुंचाना, उन्हें प्रदूषित करना या उनके साथ दुर्व्यवहार करना, किसी व्यक्ति को नुकसान पहुंचाने के समान माना जाएगा। यह फैसला पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह दर्शाता है कि नदियों को अब केवल प्राकृतिक संसाधनों के रूप में नहीं, बल्कि जीवित प्राणियों के रूप में देखा जाना चाहिए। जहां एक ओर बांधों से कई लाभ मिले हैं, वहीं इसने आदिवासी और मछुआरा समुदायों को प्रभावित किया है और नदी पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान पहुंचाया है।

डाउन टू अर्थ के रिचर्ड महापात्रा के अनुसार दुनिया भर में नदियों पर अब तक 62,000 बड़े बांध और लाखों छोटे अवरोध बनाए जा चुके हैं। डेम रिमूवल यूरोप (डीआरई) के अनुसार, 2024 में 23 देशों ने 542 बाधाओं को हटाया है।2020 में अभियान की शुरुआत के बाद से 2024 में हटाई गई बाधाओं की संख्या सबसे अधिक है।

राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण ने भारत में नदियों के संरक्षण के लिए कई महत्वपूर्ण आदेश दिए हैं। इन आदेशों का उद्देश्य मुख्य रूप से - नदी प्रदूषण रोकना, अवैध खनन नियंत्रित करना, अपशिष्ट प्रबंधन सुनिश्चित करना और जलधाराओं को अविरल बनाए रखना है।भारत में नदियों की रक्षा के लिए प्रदूषण नियंत्रण, प्रवाह संरक्षण, तट प्रबंधन, जनभागीदारी और कानूनी उपाय आवश्यक हैं। सरकार ने नमामि गंगे जैसी योजनाएं शुरू की हैं, परंतु सफलता तभी मिलेगी जब स्थानीय समुदाय, सरकार, उद्योग और नागरिक मिलकर नदी को संसाधन नहीं, बल्कि जीवन के रूप में संरक्षित करें।

करण जौहर

'मुझ पर नेपोटिज्म के आरोप क्यों'

जाने-माने फिल्मकार करण जौहर ने अपने ऊपर लगे नेपोटिज्म के आरोपों को धोने की एक बार फिर से कोशिश की। इसलिए कि उन पर फिल्म इंडस्ट्री के लोगों के बच्चों को ही आगे बढ़ाने के आरोप लगते रहे हैं। उन्होंने 'द बैड्स ऑफ बॉलीवुड' के दो नए सितारों का नाम लेते हुए कहा है कि वो आउटसाइडर है, वो आज डेब्यू ऑफ द ईयर कहला रहा है। उन्होंने कहा है कि वो आज तीन और फिल्में कर रहा है, आप उसका जिक्र क्यों नहीं कर रहे।

करण जौहर अपने ही चैट शो 'कॉफी विद करण' के दौरान भाई-भतीजावाद को बढ़ावा देने को लेकर निशाने पर आए थे। करण के खिलाफ ये मुद्दा कंगना रनौत ने उठाया और इसके बाद से इस शब्द ने जमकर तूल पकड़ लिया। उन्होंने करण को 'मूवी माफिया' कहकर उन पर केवल इंडस्ट्री के लोगों को मौका देने का आरोप लगाया। करण इस वक्त 'द बैड्स ऑफ बॉलीवुड' को लेकर चर्चा में हैं। इस सीरीज में दो नए सितारों की जमकर चर्चा है। हाल ही में करण ने एक इंटरव्यू में इन दो सितारों का नाम लेकर नेपोटिज्म के आरोपों के दाग धोने की कोशिश भी की।

वैसे वे पहले भी नेपोटिज्म के खिलाफ बोल चुके हैं। एक बार फिर से उन्होंने अपने ऊपर लगे इस दाग को धोने की कोशिश की। नेपोटिज्म के आरोपों को खारिज करते हुए करण जौहर ने दो नए चमकते सितारों का नाम लिया जो आउटसाइडर्स भी हैं और इस वक्त इंडस्ट्री में इनकी खूब चर्चा भी है। राज शमानी से एक बातचीत में करण जौहर ने कहा की जान्हवी, सारा, अनन्या की बात करोगे तो लक्ष्य लालवानी का भी लॉन्च हुआ है। फिल्म में 52 करोड़ रुपए की फिल्म बनी है और ये फिल्म पूरी तरह उसी के कंधे पर है। वो आउटसाइडर है, मैं उसको कहीं से नहीं जानता, वो आज 'डेब्यू ऑफ द ईयर' कहला रहा है। वो आज तीन और फिल्में कर रहा है। आप उसका जिक्र क्यों नहीं कर रहे।

इसके बाद वो आगे एक और हीरो का नाम लेते हैं और कहते हैं कि राघव जुयाल खुद स्टेज पर कह रहा है कि मेरा सबसे बड़ा ब्रेक किल है और मैं इस इंडस्ट्री का हिस्सा नहीं हूं। मैं देहरादून का लड़का हूं। मुझे गुनीत मोंगा और करण जौहर ने ये ब्रेक दिया है। वो भी आउटसाइडर ही है। उसका क्रेडिट आप मुझे क्यों नहीं दे रहे। वो फिर कहते हैं कि अगर

आप मुझे ट्रोल कर रहे हो, नेपो किड्स को लॉन्च करने के लिए तो मेरी तारीफ भी क्यों नहीं कर रहे, मेरी सबसे बड़ी फिल्म एक आउटसाइड के साथ करने के लिए। उनकी इन बातों पर लोगों ने रिएक्शन देना शुरू कर दिया है। एक ने कहा- बस दो आउट साइडर्स और वो भी हाल में लॉन्च हुए। एक और ने कहा कि भाई, राघव का श्रेय किसी को नहीं मिल सकता, वो फिल्मों में आने से पहले एक ब्रांड बन गए, उनका आउटसाइडर स्ट्रगल 10 साल पहले हो चुका। एक ने कहा कि वास्तव में ये कोई लॉन्च नहीं है, क्योंकि वह कई वर्षों से एक फेमस टीवी एक्टर और होस्ट हैं।

करण ने कहा ये भी कहा था कि यह लेबल उन्हें अब भी उलझन में डालता है। उन्होंने कहा था कि उनके पिता, दिवंगत फिल्म निर्माता यश जौहर पहले से ही फिल्म इंडस्ट्री का हिस्सा थे। करण ने कहा था कि मैं हमेशा से ही एक इनसाइडर रहा, क्योंकि मेरे पिता भी इंडस्ट्री का हिस्सा थे। करण ने माना कि उनके पिता के नाम ने उनकी एंट्री को आसान तो बनाया। लेकिन, फिर भी इसके अपने दबाव भी थे।

उन्होंने फिल्म 'कुछ कुछ होता है' जो अपने निर्देशन में बनी पहली को याद करते हुए कहा कि अगर मैं कोई फ्लॉप फिल्म बनाता तो हमें अपना घर बेचना पड़ता। उन्होंने आगे कहा कि मेरे पिता ने अपने बेटे के लिए जोखिम उठाया था उन्होंने सफाई देते हुए कहा था कि यहां लोग कहते हैं कि मैंने किसी का करियर बर्बाद कर दिया। नहीं, मैंने किसी के साथ कुछ नहीं किया। मैंने बस अपना काम किया। ये लोगों की धारणा है।

'अमर सिंह चमकीला' का विदेशों में भी जलवा

दिलजीत दोसांझ अपने गानों के साथ एक्टिंग से भी लोगों का दिल जीत रहे हैं। उनकी फिल्म 'अमर सिंह चमकीला' के लिए दिलजीत को एमी अवॉर्ड्स के लिए नॉमेनेट किया गया। पंजाबी सिंगर-एक्टर दिलजीत दुनियाभर में छाए हैं। उनकी फैन फॉलोइंग बहुत तगड़ी है। उनके लाइव कॉन्सर्ट के लिए लोग दीवाने रहते हैं, वहीं जब उनकी कोई फिल्म आती है तो फैंस बहुत ज्यादा एक्साइटेड हो जाते हैं। अब दिलजीत के फैंस के लिए खुशखबरी है।

एक्टर को एमी अवॉर्ड्स के लिए नॉमिनेट किया गया, इसकी जानकारी दिलजीत ने सोशल मीडिया पर दी है। दिलजीत की परिणीति चोपड़ा के साथ फिल्म अमर सिंह चमकीला नेटफ्लिक्स पर आई थी। इस फिल्म को लोगों ने बहुत पसंद किया था। नेटफ्लिक्स पर इनसे कई रिकॉर्ड भी तोड़ दिए। अब इसी फिल्म के लिए

दिलजीत दोसांझ को नॉमिनेट किया गया।

दिलजीत दोसांझ ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर पोस्ट शेयर की, जिसमें लिखा कि एमी अवॉर्ड्स में बेस्ट एक्टर कैटेगरी में उन्हें अमर सिंह चमकीला के लिए नॉमिनेट किया गया। दिलजीत ने ये पोस्ट शेयर करते हुए लिखा 'ये सिर्फ इम्तियाज अली सर की वजह से हुआ है। बेस्ट एक्टर कैटेगरी के साथ एक और कैटेगरी में इस फिल्म को नॉमिनेट किया गया।' अमर सिंह चमकीला को टीवी मूवी/मिनी सीरीज की कैटेगरी में भी नॉमेनेट किया गया है. ये फिल्म पंजाबी सिंगर अमर सिंह चमकीला की बायोपिक है।

दिलजीत दोसांझ की चमकीला को लेकर विवाद भी हुआ। उसके बावजूद इस फिल्म को खूब पसंद किया गया। दिलजीत चमकीला के किरदार में एकदम रम गए थे। उनके काम की खूब तारीफ हुई है। वर्कफ्रंट की बात करें तो दिलजीत दोसांझ जल्द ही 'बॉर्डर-2' में नजर आने वाले हैं। वो फिल्म की शूटिंग में बिजी हैं। हाल ही में उनका एक शेड्यूल पूरा हुआ। उन्होंने सोशल मीडिया पर शेड्यूल पूरा होने की जानकारी दी थी। दिलजीत के साथ इस फिल्म में सनी देओल, अहान शेट्टी और वरुण धवन अहम किरदार निभाते नजर आएंगे।

रियल बॉक्स

किताबों में छुपे कथानकों को कौन ढूंढेगा!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

किसी भी फिल्म की ऐसी स्क्रिप्ट लिखना आसान नहीं है, जो दर्शकों के दिमाग पर असर डाले। यही कारण है कि अब गूढ़ अर्थों वाली साहित्यिक कृतियों पर फ़िल्में बनाने का चलन ख़त्म सा हो गया। इसलिए कि फिल्मकार का उस साहित्यिक कृति के मूल भाव को समझना पहली शर्त होती है। इसके बाद स्क्रिप्ट भी उसी भाव को प्रदर्शित करे, तभी कोई फिल्म जन्म लेती है। क्योंकि, कथाकार की भावना को समझना, उसमें मनोरंजन का पक्ष ढूँढना और सबसे बड़ी बात ये पता लगाना कि जब ये परदे पर आएगी तो इसे दर्शक स्वीकारेंगे या नहीं! क्योंकि, फिल्म के विषयों को लेकर दर्शकों का नजरिया समय के साथ बदलता है। अब एक्शन, रोमांस और बदले की भावना वाली कहानियों पर फ़िल्में नहीं बन रही! यदि कोई हिम्मत कर भी रहा, तो ऐसी फ़िल्में पसंद नहीं की जा रही! प्रेम कहानियों पर बनी फ़िल्में भी प्रेक्टिकल होती जा रही हैं, जैसे 'सैयारा' और 'बरेली की बरफी।'

साहित्य और सिनेमा दोनों ही अलग विधा हैं। लेकिन, जब से फिल्मों में कहानियों को जगह मिलने लगी, इसका आधार कहीं न कहीं साहित्यिक कृतियों ही थी। हिंदी की पहली फिल्म 'हरिश्चंद्र' भी भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'हरिश्चंद्र' पर ही आधारित रही। इसके बाद प्रेमचंद की कई कालजई कृतियों पर फ़िल्में बनाई गई! कुछ चली तो कुछ को दर्शकों ने नकार दिया। मुंबईया फिल्मकार ने हिंदी की कृतियों पर फिल्म बनाने से हमेशा ही परहेज किया है। कई सालों में बमुश्किल कोई एक फिल्म आती है, जो किसी साहित्यिक कृति को आधार मानकर बनाई जाती है। साहित्यिक कृतियों पर फ़िल्में बनाने के अब तक कई प्रयोग हुए, पर ज्यादातर को सफलता नहीं मिली! जितना किसी साहित्यिक कृति को पसंद किया गया, उस पर बनी फ़िल्में उतनी सफल नहीं रहीं। कुछ ही फ़िल्में याद रखने लायक भी नहीं बन सकी। मशहूर कथाकार काशीनाथ सिंह की मशहूर कृति 'काशी का अस्सी' पर चंद्र प्रकाश द्विवेदी ने फिल्म 'मोहल्ला अस्सी' बनाई, पर इस फिल्म का क्या हश्र हुआ सब जानते हैं। प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' पर इसी नाम से बनी फिल्म, फणीश्वरनाथ रेणू की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम', महाश्वेतादेवी की कहानी पर बनी रुदाली, विमल मित्र के उपन्यास पर बनी साहब-बीवी और गुलाम, टैगोर की कहानी 'नष्टनीड़' पर सत्यजीत राय की फिल्म 'चारुलता' जरूर ऐसी फ़िल्में थी, जो याद रखने योग्य है।

साहित्य किसी दृश्य या घटना की जो व्याख्या या विश्लेषण करता है, हर पाठक के पास वही पहुंचता है। पाठकों के स्तर में अंतर के आधार पर उसका प्रभाव भी अलग-अलग होता है। जबकि, सिनेमा दृश्य माध्यम होता हैं। उसके पास व्याख्या और विश्लेषण की सुविधा बहुत कम होती है। साहित्य में जो व्याख्या उसके प्रभाव को बढ़ाती है, उसी व्याख्या की कोशिश सिनेमा के असर को चौपट कर देती है। यही कारण है कि अधिकांश मशहूर साहित्यिक कृतियों पर फ़िल्मी प्रयोग सफल नहीं हुए। आशय यह नहीं कि सिनेमा कि सम्प्रेषणीयता कम है। किन्तु, सिनेमा की भी अपनी कुछ खास ताकत हैं, जो साहित्य के पास नहीं होती। आखिर दृश्य माध्यम की ताकत को तो आंकना ही होगा। फिल्मों में संगीत और दृश्य की ताकत सिनेमा को ऐसी क्षमता देती है जो उसे दूसरे और माध्यमों से अलग खड़ा करती है। ध्वनि और प्रकाश सिनेमा के कथानक की कई कमजोरियों ढांप देता है। जबकि, साहित्य के पास सिर्फ शब्दों की क्षमता होती है। यही कारण है कि कई बार अच्छे लेखक भी अपनी बात कहने में लड़खड़ा जाते हैं।

सिनेमा के पास मौन की भाषा के इस्तेमाल की भी सुविधा होती है। लेकिन, मौन को व्यक्त करने के लिए साहित्य को बहुत से शब्द खर्च करना पड़ते हैं। साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता ये है कि पाठक पढ़ते हुए अपनी कल्पनाशक्ति से दृश्यचित्र बनाता है। जबकि, सिनेमा में दर्शक को डायरेक्टर की कल्पनाशक्ति देखता पड़ती है। ऐसे में सिनेमा के दर्शक की अपनी कल्पना शक्ति लुप्त हो जाती है। जरूरी नहीं कि डायरेक्टर की कल्पना शक्ति और दर्शक की सोच की दिशा एक ही हो! इसलिए अधिकांश साहित्य पर बनी फिल्म सफल नहीं हो पाती। हर फिल्म के पीछे

व्यावसायिक दबाव भी काम करता है। ये दबाव होता है मनोरंजन के बीच साहित्यकार की सोच के साथ भी पूरा इंसाफ हो! इसलिए कि साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति से पाठकों को जिस कहानी से रूबरू करवाता है, फिल्मकार उसे उतनी ईमानदारी से परदे पर उतार भी पाता है या नहीं, ये भी ध्यान रखने वाली बात है। आज गुलजार जैसे फिल्मकार तो है नहीं, जो कमलेश्वर की कृति 'आंधी' और 'मौसम' के साथ न्याय करें।

किशोर साहू ने शेक्सपियर के नाटक 'हेमलेट' पर इसी नाम से एक फिल्म बनाई थी, जिसे नकार दिया गया। भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' पर केदार शर्मा ने फिल्म बनाई, जो सफल रही। चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी 'उसने कहा था' पर भी फिल्म बनी। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास पर 'धर्मपुत्र' पर बीआर चोपड़ा ने फिल्म बनाई। फणीश्वरनाथ रेणु की 'कहानी मारे गए गुलफाम' पर 'तीसरी कसम' बनी और तीनों फिल्में बुरी तरह फ्लॉप रहीं। कहानीकार राजेंद्र सिंह बेदी की कृति 'एक चादर मैली सी' पर भी जब फिल्म बनी, पर वह भी नहीं चली। इसका एक ही कारण था कि वे लेखक के मर्म को पकड़कर उसे परदे पर नहीं उतार सकीं! इसे हिंदी फिल्मों का दुर्भाग्य ही माना जाना चाहिए कि फिल्मों में पैसा लगाने वालों का साहित्य से कोई सरोकार नहीं रहा! जबकि, बांग्ला और मराठी फ़िल्में लम्बे समय तक साहित्यिक कृतियों से जुड़ी रहीं। इसके विपरीत हिंदी सिनेमा पर पंजाबी, उर्दू और दक्षिण भारत के फिल्मकार हावी रहे हैं। 70 के दशक में जरूर हिंदी साहित्य पर फ़िल्में बनी, पर ये भी बांग्ला भाषी बासु चटर्जी ने बनाई। उन्होंने राजेंद्र यादव के उपन्यास सारा आकाश, मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच' पर 'रजनीगंधा' बनाई। इससे पहले शरदचंद्र के उपन्यासों पर फिल्म बनाने के कई प्रयोग हुए हैं। लेकिन, अब जिस तरह की फ़िल्में पसंद की जा रही है, उम्मीद है कि शायद फिल्मकारों की नजर अच्छी कहानियों पर पड़े और वे उन्हें परदे पर उतारने का जोखिम ले सकें।

हिंदी फिल्म निर्माण के शुरूआती दौर में लंका दहन, कालिया मर्दन, श्री कृष्ण जन्म, सैरंध्री, नल दमयंती, भक्त विदुर और सावित्री जैसी कई फिल्मों के कथानक पौराणिक कथाओं से लिए गए। इसके बाद तो कई साहित्यिक रचनाएं, उपन्यास और नाटक परदे पर फिल्म के रूप में आए। 1934 में प्रख्यात लेखक मुंशी प्रेमचंद ने अजंता सिनेटोन के लिए 'मिल मजदूर' की कहानी लिखी। 1936 में इसी कहानी को 'गरीब परवर' के नाम से बनाया गया। प्रेमचंद की कहानी 'नवजीवन' पर 1935 में और उपन्यास 'सेवा सदन' पर आधारित 'बाजारे हुस्न' का निर्देशन नानू भाई वकील ने किया था। 1946 में 'रंगभूमि' पर 'चौगाने हस्ती' नाम से एम भवनानी ने फिल्म निर्देशित की। लेकिन, प्रेमचन्द को फिल्मों की दुनिया ज्यादा रास नहीं आया और वे बनारस लौटकर फिर लेखन में लग गए। बाद में उनकी कहानियों गोदान, गबन, दो बैलों की जोड़ी और 'शतरंज के खिलाड़ी' पर फिल्मों का निर्माण हुआ। 1977 में आई फिल्म 'शतरंज के खिलाड़ी' का निर्देशन सत्यजीत रे ने किया था। ये कहानी वाजिद अली शाह के शासनकाल (1847-1856) के समय की है।

इसके बाद फ़िल्मी कथानकों को साहित्य में खोजा जाने लगा। विख्यात निर्माता-निर्देशक वी. शांताराम ने 1943 में 'शकुंतला' और 1961 में 'स्त्री' नाम से इसी कहानी को फिल्म के परदे पर उतारा गया। इसके अलावा कालिदास के ही 'मेघदूत' पर भी निर्माता-निर्देशक देवकी बोस ने फिल्म बनाई। मोहन राकेश की ही कृति 'आषाढ़ का एक दिन' भी सिनेमा के परदे पर उतरी। उनके उपन्यास 'आधे-अधूरे' पर भी फिल्म का निर्माण शुरू तो हुआ, पर पूरा नहीं हो सका। 1982 में राजश्री फिल्म्स ने 'नदिया के पार' केशव प्रसाद मिश्रा के उपन्यास 'कोहबर की शर्त' पर बनाई, जिसे गोविन्द दुबे ने निर्देशित किया था। इसके बाद 1974 में बासु चटर्जी ने 'रजनीगंधा' निर्देशित की, जो मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच हैं' पर आधारित है। भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' पर दो बार (1941 और 1964) इसी नाम से फिल्म बनी। 1988 में भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' पर इसी नाम से फिल्म बनाई गई। इस उपन्यास के लिए भीष्म साहनी को साहित्य अकादमी अवार्ड से भी नवाज़ा गया था। 1978 में कमलेश्वर के उपन्यास 'पति पत्नी और वो' पर भी फिल्म बनी जो विवाहेतर सम्बन्ध और उसमें उलझे लोगों के उलझनों की कहानी है। राजेन्द्र यादव के उपन्यास 'सारा आकाश' को भी परदे पर बासु चटर्जी ने प्रस्तुत किया। माखनलाल चतुर्वेदी के नाटक कृष्णार्जुन युद्ध, मुक्तिबोध की कहानी पर 'सतह से उठता आदमी और धर्मवीर भारती के उपन्यास 'सूरज का सातवां घोड़ा' पर भी फिल्म बनी है। सीधे शब्दों में कहा जाए, तो कहानी चाहे किसी उपन्यास से ली जाए या साहित्यिक कृति से जब तक उसका दृश्यांकन प्रभावी नहीं होगा, दर्शक उसे पसंद नहीं कर सकता।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अगले जनम मोहे फिर लता मंगेशकर न कीजो

अशोक जोशी

क्या कोई सोच भी सकता है कि दुनियाभर में मशहूर, अकूत धन सम्पदा और पुरस्कारों से झोली भरा कोई सम्मानित व्यक्ति चाहे कि

उसे यदि दोबारा धरती पर जन्म लेना पड़े तो वह उस रूप में न जन्में जिस रूप में आज वह दुनियाभर में जाना जाता है! स्वर कोकिला भारत रत्न लता मंगेशकर उन बिरला इंसानों में से एक है, जिन्होंने जीवन के शिखर पर रहते हुए यह कामना की थी कि ईश्वर उन्हें यदि अगला जन्म दे तो लता मंगेशकर बनाकर दुनिया में न भेजे।

आज 28 सितम्बर को संगीत प्रेमी जिस लता मंगेशकर को याद कर दोबारा उनके फिर धरती पर लौटने की कामना कर रहे हैं, वे खुद कभी नहीं चाहती थी, कि दोबारा अपने मौजूदा स्वरूप में पुनर्जन्म ले। सारी दुनिया को भले ही लता की आवाज शांति सुकून और सुख देती हो, लेकिन खुद लता का यही मानना था कि सबसे मधुर गीत वही है, जिसे हम दर्द के सुर में गाते हैं। 28 सितंबर 1929 को इंदौर के सिख मोहल्ले में जन्मी लता मंगेशकर के पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर मराठी रंगमंच की जानी मानी हस्ती थी। लता मंगेशकर का जन्म का नाम 'हेमा' था। बाद में उनके माता-पिता ने उनका नाम बदलकर 'लता' रख दिया, जो उनके पिता के एक नाटक 'भाव बंधन' में एक महिला पात्र, लतिका के नाम पर रखा गया था।

अपने पिता के असामयिक निधन ने मंगेशकर परिवार पर मुसीबत खड़ी कर दी, तब आठ लोगों के परिवार का भरण पोषण करने के लिए उन्हें 1942 में 13 साल की उम्र में उन्हें वसंत जोगलेकर की मराठी फ़िल्म 'किती हसाल' के लिए गायन कर आजीविका कमाने के लिए मजबूर होना पड़ा। अपने करियर में उन्होंने भारतीय भाषाओं में 30,000 से ज़्यादा गाने गाकर दुनिया भर में संगीत प्रेमियों के दिल में राज करते हुए 'भारत रत्न' जैसे सर्वाच्च नागरिक पुरस्कार पाने और सुख सम्पदा से भरपूर होने के बावजूद उनके दिल में कहीं न कहीं टीस थी। उन्होंने जीवन भर जो संघर्ष किया और जितने विवादों में उन्हे घसीटा गया, उससे वह इतनी आहत थी कि उन्हें तमाम खुशियां बेमानी लगने लगी।

आज कल पांव जमीं पर नहीं पड़ते मेरे गाने वाली लता संघर्ष के दिनों में स्टूडियो तक पैदल जाना पड़ता था, जिससे पैरों में पड़े छालों को ताउम्र नहीं भूली। खाने पीने और हीरे जड़ित आभूषण की शौकिन लता के यह सारे शौक बाहरी दुनिया के लिए थे। अंदर से वे अपने आपको बहुत गरीब मानती थी। जिस समय उन्होंने फिल्मों में पार्श्व गायन आरम्भ किया, उस दौर में नूरजहां और सुरैया का दौर शबाब पर था। इसलिए उनके साथ तत्कालीन संगीतकारों ने दोयम दर्जे का व्यवहार किया। बेहतरीन आवाज के बावजूद उन्हें काफी सालों तक कोरस में अपनी आवाज मिलाने

को बाध्य किया गया। यह दर्द भी उन्हें ता उम्र सालता रहा।

उनके साथ विवादों की शुरूआत तब हुई जब ओपी नैयर की फिल्म 'आसमान' में उन्होंने गीत नहीं गाया। उस दौरान यह अफवाहें जोरों पर थी कि अपने घमंड के चलते लता ने ओपी नैयर जैसे नए संगीतकार को घास नहीं डाली। जबकि, बात यह नहीं थी। दरअसल नैयर को ही लता की आवाज अपने संगीत के अनुकूल नहीं लगी। उन्होंने एक बार खुद स्वीकार किया था कि लता दुनिया की बेजोड़ गायिका है। लता से उनका कभी विवाद नहीं हुआ। ओपी कहते थे कि मैं जिस तरह का संगीत बनाता हूं, उस सांचे में लता फिट नहीं बैठती। क्योंकि, उनकी आवाज एकदम बारीक हैं और उन्हें गीता दत्त और शमशाद बेगम जैसी तीखी आवाज वाली गायिकाएं ज्यादा उपयुक्त लगी। स्वाभाविक रूप से सोचा जा सकता है कि यदि ओपी नैयर और लता मंगेशकर के बीच तनाव या झगड़ा होता, तो क्या वह आशा भोंसले से गीत

गवाकर उसे इतना लोकप्रिय बनाते या आशा उनके लिए गाने गाती!

उनके साथ दूसरी अफवाह मोहम्मद रफी को लेकर उड़ाई गई। यह प्रचारित किया था कि मोहम्मद रफी ने लता के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा, जिससे नाराज होकर उन्होंने रफी के साथ गाना गाना बंद कर दिया था। जबकि, हकीकत यह है कि उनके बीच कहासुनी रायल्टी को लेकर हुई थी। लता चाहती थी कि गायकों भी रिकार्ड बिक्री और प्रसारित गीतों की रायल्टी मिले। जबकि, रफी का मत था कि एक बार जब हम गाने के लिए अपना पारिश्रमिक ले चुके हैं, तो रायल्टी किस बात की! दरअसल यह अधिकारों और उसूलों की लड़ाई थी।

लता से जुड़ा एक विवाद यह भी है कि जिस समय उनके निवास पैडर रोड के सामने फ्लाय ओवर बन रहा था, तो लता ने उसका विरोध किया

था। क्योंकि, उनका निवास प्रभुकुंज उससे आड़ में आ रहा था। लेकिन, लता ने ऐसा कोई विरोध नहीं किया था। राजसिंह डुंगरपुर और उनकी मित्रता को लेकर भी यह अफवाह उडाई गई थी, कि दोनों ने छिपकर विवाह कर लिया है। लेकिन इस बात में भी कोई दम नहीं था। क्योंकि, यदि ऐसा होता तो लता को दुनिया से अपने संबंध छिपाने की क्या जरूरत पड़ती!

लता मंगेशकर पर गाहे बगाहे इस तरह के आरोप लगते रहे कि वे नहीं चाहती कि उनके सामने कोई नई गायिका सफल हो जाए। इसलिए वह उन्हें हतोत्साहित करती रही तथा अपने पसंदीदा संगीतकारों को नई गायिकाओं से न गवाने की जिद करती रही। यह भी केवल कपोल कल्पना ही है। लता मंगेशकर ऐसी गायिका थी, जिन्हें सबसे ज्यादा 'फिल्म फेयर' अवार्ड मिले। उनकी आवाज ही कुछ ऐसी थी कि दूसरी कोई गायिका उनके मुकाबले ठहर ही नहीं पाती थी। इसीलिए उन्होंने फिल्म फेयर से अनुरोध किया कि पुरस्कार नामिनेशन में उनका नाम शामिल न किया जाए, ताकि दूसरी और नई गायिकाओं को यह पुरकार मिल सके।

उन पर यह आरोप भी लगता रहा कि वह पैसे लिए बिना किसी के लिए भी नहीं गाती थी। मध्य प्रदेश सरकार ने जब उनके नाम से लता मंगेशकर पुरस्कार शुरू किया, तब भी उन्होंने मुफ्त में गाने से इंकार कर दिया था। उन पर यह भी आरोप लगे कि उन्होंने इंदौर में उनकी माताजी की स्मृति में बनाए गए माई मंगेशकर हॉल के लिए भी किसी तरह की आर्थिक सहायता प्रदान नहीं की। वह जानती थी कि पैसों का क्या मूल्य होता है और लोग किस तरह भावना भड़का कर अपना उल्लू सीधा करते हैं या धोखाधड़ी करते है।

कम ही लोग जानते हैं कि जिस समय भारतीय टीम ने पहली बार विश्वकप जीता तो क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के पास इतना भी पैसा नहीं था कि वह अपने विश्वविजेता खिलाड़ियों का सम्मान समारोह आयोजित कर सके। तब अपने मित्र राजसिंह डुंगरपुर के अनुरोध पर उन्होंने न केवल मुफ्त में कार्यक्रम आयोजित किया, बल्कि अपने कार्यकम से जमा लाखों की राशि एकत्रित कर भारतीय क्रिकेटर्स सम्मानित राशि प्रदान करने में योगदान दिया। शायद इन्हीं लड़वे और खट्टे अनुभवों से दुखी होकर लता ने यह कामना की थी, कि अगले जन्म में वे दोबारा लता मगेशकर बनकर धरती पर न आए। लेकिन, सौ बातों की एक बात तो यह है कि लता को दोबारा जन्म लेने की जरूरत भी नहीं है। क्योंकि, जब तक उनके गीत गूंजते रहेंगे वह हमारे बीच सदा जीवित रहेंगी।

'मृद् बांसुरी' के अनोखे वादक और आविष्कर्ता पं. दीपक भानुसे

दीपक चैतन्य
(लेखक मराठी के साहित्यकार व कला मर्मज्ञ हैं)

जन्माष्टमी का अवसर,स्थान-औंध पुणे का पंडित भीमसेन जोशी नाट्य गृह एवं जहां हजारों दर्शकों की मौजूदगी में साकार हुआ वह अद्भुत प्रसंगा। रंगमच पर अनेक सम्मानित महानुभावों के साथ विराजे प्रख्यात वेणु गंधर्व पंडित केशव गिंडेजी एवं उनके हाथ में मंच पर बंधी सुंदर छोटी-सी मटकी की ओर देख रहा लगभग एक वर्ष का अबोध बालक। कुछ ही क्षणों मे दोनों निस्पृह आत्माओं ने उस मटकी को छिन्न-विछिन्न किया एवं करतल ध्वनि के साथ उपस्थित महानुभावों को जन्माष्टमी का प्रसाद वितरित किया जाने लगा।

आंखों में समा जाने वाला वह क्षण था, प्रसिध्द युवा बांसुरी वादक पंडित दीपक भानुसे व्दारा अपने गुरू पंडित केशव गिंडे जी के 85 वें जन्म दिवस पर जन्माष्टमी उपलक्ष में दी जा रही अनूठी और निःशब्द करती संस्कारी मान वंदना। सिरमौर बात यह भी थी की इसके पूर्व के आयोजन में ही युवा वेणु साधक दीपक ने अपने पंधरा शिष्यों के समवेत कल्याण नवरंग राग को विविध रागों की बंदिशों मे बांधकर लगभग 27 रागों की प्रस्तुति उपस्थित जनसमूह के समक्ष दी थी। कहना न होगा कि उनका यह सामूहिक प्रयास भी सुधी जनो द्वारा आनंद विभोर होकर करतल ध्वनि से सराहा गया था, जो निश्चय ही बांसुरी के भावी सरोकार की आहट साबित हो रहा था।

इसके बाद रसिकों के सम्मुख एक और अजूबा रंगमंच पर साकार होने जाने वाला था, वह था दीपकजी एवं उनके सहयोगियों द्वारा निर्मित मृद बांसुरी (मिट्टी की बांसुरी) का लोकार्पण और उसका वादन। पहले गुरूजी पंडित गिंडेजी के हाथों मृद बांसुरी का उद्घाटन हुआ और रसिकों के सान्निध्य में जैसे ही उसका कुशल वादन हुआ, नाट्य गृह में तालियों की गड़गड़ाहट मानो थम ही नहीं रही थी। इस अवसर पर इस कला के ज्ञानी गुरूजनों ने भी अत्यंत आल्हाद के साथ घोषित किया कि यह मृदा बांसुरी सुरमयी है और मन को प्रसन्न करने वाली है। इसके आविष्कारक दीपकजी और उनके सहयोगी बधाई के पात्र हैं। ऐसे में आवश्यक है कि इसका कोई नामकरण किया जाए। इसके लिए दीपकजी ने अपने गुरू गिंडेजी से निवेदन किया कि वे ही इसका नामकरण करें। गिंडेजी ने कहा कि चूंकि यह वाद्य सर्वसम्मति से बना है, सुरमय है, और इसका आविष्कार दीपकजी ने किया है, अत- इसका नाम 'मृदीप वेणु' किया जाए। इसे मिट्टी की बांसुरी कहने की आवश्यकता नहीं है। इस घोषणा का सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

चूंकि मैं भी उस अवसर का साक्षी था और अभिभूत भी था अत- मैने तत्काल आकर्षक व्यक्तित्व के धनी दीपकजी से बातचीत करने का मन बना लिया। अत्यंत सहजता से चर्चा में गुरू शिष्य परंपरा के पथिक रहे इस अनूठे कलाकार के अचंभित करने वाले आयाम मुझे प्राप्त होते गये। जैसे वर्तमान में लिम्का बुक मे उल्लेखित केशववेणु के आविष्कर्ता तथा बांसुरी के सर्व कालीन पुरोधा मैहर घराने के पंडित पन्नालालजी के शिष्य पंडित केशव गिंडे के विधिवत शिष्य रहे दीपकजी वास्तव में संस्कृत एवं संगीत(बांसुरी) विषय में सावित्रीबाई फुले विद्यापीठ पुणे के ललित कला केंद्र से एम.ए. हैं और वही पर आचार्य भी हैं। साथ ही आप अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल के भी विधिवत व्याख्याता हैं।

इसके पूर्व आपने औरंगाबाद के साहित्य अकादमी प्राप्त कलाकार श्रीनाथ नेरलकरजी से संगीत(गायन) तथा पंडित श्रीपाद कुलकर्णी से बांसुरी की विधिवत शिक्षा प्राप्त की है। जानने की बात यह भी है कि आठवीं कक्षा से ही आपका इस कला की ओर रूझान हो गा था। और आज अद्भुत नम्रता के साथ,अथक रियाज एवं अपने गुरूजनों आशीष से वो इतनी ऊंचाई पर पहुंचे हैं।

पिछले कुछ ही वर्षों में आपने सिंगापुर के 100 साल से भी पुरातन कला उत्सव तथा मलेशिया के इंडियन कल्चर सेंटर के साथ ही पुणे की कलाश्री संगीत संस्था के वरिष्ठ शास्त्रीय गायक श्री सुधाकर चव्हाण के साथ अमेरिका में संगीत के 25 संस्थानों मे बांसुरी की जुगलबंदी की सफल एवं मन मोहक प्रस्तुति दी। दीपक अब वहां के स्थायी मेहमान हो गए हैं। अंत्यत ही सुरीले ढंग से शास्त्रीय संगीत का बांसुरी वादन करने वाले दीपकजी की एक विशेषता यह भी है की वे उसी उत्कटता के साथ उप शास्त्री य एवं सुगम संगीत भी बजाते हैं और अपने गुरूजी द्वारा आविष्कृत केशव-वेणु बजाने वाले बिरले शिष्यों में से एक हैं। आपको प्रख्यात कथक नर्तक पंडित बिरजू महाराजजी के साथ बांसुरी संगत

करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है।

इतनी कम आयु में अनेकों बार देश-विदेश में सफल प्रस्तुतियां देने वाले दीपकजी को मिले सम्मानों और प्रस्तुतियों की लंबी फेहरिस्त है। इनमें उल्लेखनीय है कि उस्ताद बिस्मिल्लाखां समारोह, .आयटीसी संगीत रिसर्च अकादमी,कलकत्ता, अमूल्यज्योति महोत्सव पुणे, उस्ताद बालेखां संगीत समारोह बंगलोर, पन्नालाल घोष फेस्टीवल,मुंबई,.नविका वर्ल्ड कन्नड समिट, ऑस्टिन मीट,आस्टीन, बेंड्रीस युनिवर्सिटी,बोस्टन.इत्यादि। साथ ही आपको.कलाश्री युवा संगीत पुरस्कार,पन्नालाल घोष अमूल्य ज्योति पुरस्कार,अभिनव गान पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

आपके व्दारा आविष्कृत मिटटी की बांसुरी के संबध मे दीपकजी ने बड़ी ही सादगी से बताया कि इसके निर्माण में मुझे अनुश्री ढवले एवं पंकज वाणी का भी सहयोग प्राप्त हुआ है.क्योकि कोई भी नया निर्माण अकेले नहीं होता। री एक टीम इसके पीछे काम करती है। हालांकि मिटटी की प्रकृति को देखते हुए उसे एक निश्चित लंबाई में साधे रखना आसान नहीं था, क्योंकि गीली मिटटी को आँच पर तपाये रखना भी मुश्किल ही लग रहा था। पर यह मां शारदा की कृपा थी कि हम यह कर पाए। मै इसें अपने गुरू जनो के सम्मुख जन्माष्टमी के पावन बेला में मृद बांसुरी के सुनहरे स्वरों और चार टोन स्केल में प्रस्तुत कर उनका आशीष ले पाया।

वैसे दीपकजी से बातचीत करते लग रहा था कि मैं किसी बेहद सहज,सुलझे एवं संस्कारी कला साधक से संवाद कर रहा हूं, जो अपनी मंजिल अच्छी तरह जानता है और उसी तन्मयता से अपने गुरूकुल के माध्यम से अपने अनेक शिष्यों के साथ अग्रसर भी है। उनके इस अनोखे आविष्कार पर मैंने उनका अभिनंदन किया तो उनके ओंठों पर वह बांसुरी सहज विराजमान हो गई और मुझे किसी की ये पंक्तियां याद आ गईं।

इस जमीं आसमा से आगे हूं,
वक्त के कारवां से आगे हूं,
मै कहां हूं यह तो वही जाने
पर कल जहां था आज वहां से आगे हूं।

...और क्या कह रही है जिंदगी
ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

तपस्या, यज्ञ, तप, हवन, होम, मेनिफेस्टेशन और एफ़र्मेशन

आजकल हवा में मेनिफेस्टेशन और अफरमेशन खुशबू की तरह फैल गया है लोग इनकी वर्कशॉप कर रहे हैं यूट्यूब पे अलग-अलग चैनलों पे देख रहे हैं लिख भी रहे हैं बोलकर भी कर रहे हैं जो धार्मिक हैं वो ईश्वर का नाम लेकर कर रहे हैं जो ईश्वर को नहीं मानते वो यूनीवर्स को संबोधित कर मेनिफेस्टेशन कर रहे हैं तो है क्या यह मैनिफेस्टेशन। शाब्दिक अर्थ में अभिव्यक्ति, प्रदर्शन या घोषणा को मेनिफेस्टेशन कहते हैं विचारों और भावनाओं को वास्तविकता में बदलने की सोच लिखकर बोलकर कार्यों के माध्यम से या विजुलाइजेशन करके जो आप अपने जीवन में आकर्षित करना चाहते हैं या इच्छा रखते हैं पूर्ण हो जाये उसे पूर्ण ही मानकर आभार प्रकट करते हैं और इसे वास्तविकता में होते देखते हैं। ये एक तरह का घोषणा पत्र होता है हमारी इच्छाओं का और हम इन्हें पूर्ण मान लेते हैं।

एफ़र्मेशन का शाब्दिक अर्थ होता है अभिपुष्टि, समर्थन का अभिवचन। इसका अर्थ होता है सकारात्मक पुष्टि, वाक्यांश या कथन जो आपको सकारात्मक सोचने, आत्मविश्वास बढ़ाने या इच्छित सकारात्मक वस्तुओं को बार-बार दोहराने से लिखकर या बोलकर से लक्ष्यों की प्रप्ति में मदद करते हैं। हमेशा ध्यान रखें एफ़र्मेशन में आपका सकारात्मक ही लिखना बोलना सोचा मांगना होता है इससे हमारा अचेतन मन सकारात्मक चीज़ों से भर जाता है और सकारात्मक चीजें होने लगती है। इसे ''मैं'' में लिखा जाता है जैसे ''मैं गहरी नींद सोता हूँ'' आप सुखी होना चाहते हैं तो शब्द लिखिये मैं बहुत सुखी और संतुष्ट है और ये कोई जादू नहीं है लगातार 21 दिन तक अपनी सकारात्मक सोच को लिखने बोलते रहे लेकिन पूरी फील (एहसास) के साथ तभी धीरे-धीरे आप की सोच पूरी होगी। सारे शब्द सकारात्मक होने चाहिये। हाँ अगर आप रोज़ कहते हैं मेरा कुछ अच्छा नहीं होता थक गई हूँ अपनी जिंदगी से वगैरह-वगैरह तो अवचेतन मन इसी क्रिया को करने में लग जाता है। ये सकारात्मक क्रिया किसी धर्म विशेष के लिये नहीं है और शायद इसे पूरा विश्व कर रहा है।

नौ दिन से में रवींद्र भवन भोपाल में रोज़

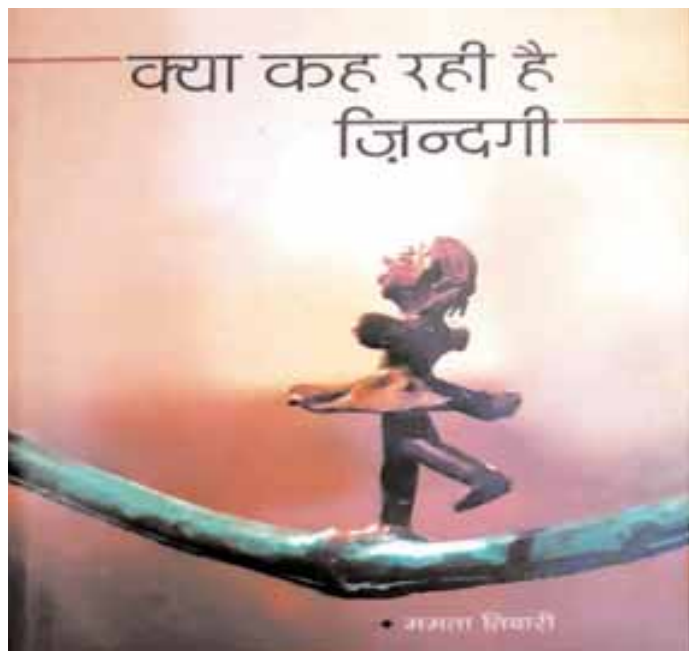

रामलीला देखने जा रही हूँ। रोज सुनते-सुनते तप, तपस्या, हवन, यज्ञ, होम आदि शब्द कान पड़े और उनका अर्थ उदाहरण सहित बताया गया। तब मुझे एहसास हुआ अभी का मेनिफेस्टेशन और एफ़र्मेशन हमारा तप, तपस्या, हवन, यज्ञ, होम ही तो है।

''तप'' आध्यात्मिक, धार्मिक, शारीरिक अनुशासन के साथ आत्मनियंत्रण, इच्छाओं का त्याग, कष्ट सहन मन को वश में करना। तप का एक अर्थ खुद को तपाना या जलाना भी होता है। वैसे तो तप आत्मा की शुद्धि के लिए किया जाता है। तप और तपस्या में क्या अंतर होता है तप एक-एक आध्यात्मिक सोच है जिसमें आत्मा की शुद्धि आत्मसंयम, आंतरिक ऊर्जा का विकास करना है और तपस्या तप को प्राप्त करने का अभ्यास है तप एक अवस्था है और तपस्या उस लक्ष्य को प्राप्त करने का माध्यम है अर्थात् आप अपने किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कठिन तप कर रहे हैं सबसे छोटा ''तप'' उपवास होता है। कठिन तप में बताया गया है 15 दिन तक कम भोजन और 45 दिन तक उपवास सिद्धि तप कहलाता है। ''जप'' किसी मंत्र, माला द्वारा ईश्वर का बार-बार उच्चारण करना जप कहलाता है यह मौन, ध्यान, संयम की क्रिया है। महाराज भगीरथ ने विश्व हित के लिए तीन बार तप किया था गंगा नदी को धरती पर उतारने के लिये उसके बाद गंगा ने मानव की कई पीढियां का उद्धार किया। जब तप से शक्ति पा जाते थे ऋषि मुनि वो कई बार उसका उपयोग क्रोधित होने पर श्राप में उपयोग करते थे जो मेनिफेस्टेशन एफ़र्मेशन से इस मायने में अलग है कि वहाँ कोई भी नकारात्मक सोच का उपयोग नहीं होता।

अब यज्ञ पर आते हैं यज्ञ एक तरीके का वैदिक अनुष्ठान है ये भी सकारात्मक होता है इसमें पवित्र अग्नि के सामने मंत्र उच्चारण कर समाज कल्याण के लिए किसी उद्देश्य से यज्ञ किया जाता है और इसमें अपनी किसी पवित्र वस्तु का त्याग करके अग्नि में समर्पित किया जाता है जिससे वे वायु और वातावरण में फैलती है और शुद्ध करती है। इसमें अग्नि में घी, शहद, सुगंध, फल, जड़ी बूटियाँ आहूति के रूप में डालते हैं जिससे सकारात्मक उत्पन्न होता है

अब ''यज्ञ'' और ''हवन'' में क्या अंतर होता है। हवन को यज्ञ का लघु रूप कह सकते हैं ये एक ऐसा कार्य माना जाता है जिसमें देवताओं को भोजन (आहुति) पहुंचाया जाता है। यज्ञ अग्नि को देवताओं आकाशीय शक्तियों और मानव चेतना के बीच एक माध्यम मानता है। हवन से हम वातावरण को शुद्ध कर सकते हैं नकारात्मक ऊर्जा दूर कर सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर सकते हैं स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं। हवन से निकलने वाला औषधीय धुँआ बीमारी, वातावरण को शुद्ध करता है मन की शांति तो सर्वोपरि है। खेतों और वातावरण में उत्पन्न जहरीले विषाणुओं को हवन का धुँआ शुद्ध करता है नित्य हवन करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा आती है और घर में आने वाली नकारात्मक दूर होती है शांति होती है यज्ञ में जब सामग्री डाली जाती है उसे होम कहा जाता है। कुल मिलाकर बात ये है कि हम युगो से आज के मेनिफेस्टेशन को करते आ रहे हैं पर तप तपस्या होम यज्ञ के लिए नई युवा पीढ़ी तार्किक है तो कोई बात नहीं मेनिफेस्टेशन में बहुत सी चीज़ें हमारे शास्त्रों से ही जन्मी है तो आप इन सब विधियों में से कुछ भी अपनाइये जीवन में नकारात्मकता नहीं आने पाये शांति अनुभव कीजिए और पूछते रहिये और क्या कह रही है ज़िंदगी?

श्रम का अपना महत्व है मगर शिक्षा के बिना सब अधूरा है। यह दृश्य इसी बात की सिद्ध करता है। – फोटो: बंसीलाल परमार

धार्मिकता आचरण की चीज है

आस्था
प्रतिभा मिश्रा
सेवानिवृत्त प्राचार्य जवाहर नवोदय विद्यालय

नवरात्रि मातारानी के नौ दिन व्रत उपासना और पूजा-पाठ का समय। मगर वर्तमान समय में कितना कुछ बदल गया आश्चर्य होता है देखकर। और उससे भी ज्यादा आश्चर्य होता है कि हम इसे सहज रुप में ले रहे हैं। बड़े-बड़े पांडाल हजारों लाखों बल्कि करोड़ों का खर्चा और शोर शराबा दिखावा चमक दमक इसके अलावा तो कुछ नजर ही नहीं आता। जहां शांतिपूर्ण तरीके से बड़े सरस भजन मां की आराधना में हुआ करते थे वे सब फिल्मी गीतों की तर्ज पर डिस्को डांस में बदल चुके हैं। बात भारतीय संस्कृति की जोर-शोर से की जाती है।

बच्चों में संस्कार और धार्मिक भावना का अभाव बताया जाता है।मगर जब कोई भी ऐसा समय आता है हमारी विचारधारा केवल शब्दों तक सीमित होकर रह जाती है।तब हम भूल जाते हैं कि हम ईश्वर को भी धोखा देने से नहीं चूक रहे हैं।

खुले आम प्रदर्शन हो रहा है और नयी पीढ़ी भी समझ चुकी है कि भगवान के नाम पर सब जायज है। इसका परिणाम सामने दिख रहा है लेकिन हम आंखें बंद करके नजर अंदाज करते जा रहे हैं।देश में शिक्षा, चिकित्सा, और ग़रीबी का स्तर कहां पहुंच गया है और हम गरीबों में अपनी मस्ती में झूम रहे हैं। एक सोच का विषय है कि हम इंसान भी रहे हैं या नहीं। बाहर के देशों में लोग अपने कार्यों में देश को आगे बढ़ने में व्यस्त हैं मनोरंजन वे भी करते हैं। ईश्वर को भी मानते हैं मगर एक व्यक्तिगत तौर पर कर्तव्यों को प्राथमिकता देते हुए। नीरज जी की पंक्तियां याद आती हैं-

क्या करेगा प्यार वो ईमान को
क्या करेगा प्यार वो भगवान को
जन्म लेकर गोद में इंसान की
प्यारी कर पाया न जो इंसान को।

बड़ी-बड़ी बातों और दिखावे की संस्कृति हमारी नहीं रही है। हमें चेतना होगा और देश के लिए सोचना होगा। धार्मिकता आचरण की चीज है जो एक दूसरे से जोड़ती है। त्याग,सेवा मानवीयता हमारी पहचान है और यदि वही हम भूल गये तो ईश्वर की अराधना केवल दिखावा बन कर रह जायेगी।

लता मंगेशकर की जयंती

रमेश रंजन त्रिपाठी

आध्यात्मिक व्यक्तित्व, लता मंगेशकर

तीन दशक पहले पत्रकार प्रीतीश नंदी ने अपने शो में लता मंगेशकर से पूछा था कि वे अगले जन्म में क्या बनना चाहेंगी? लता जी ने कहा था कि वे फिर से जन्म नहीं लेना चाहतीं, फिर भी यदि उन्हें जन्म मिला तो वे लता मंगेशकर नहीं बनना चाहेंगी। 'ऐसा क्यों' पूछे जाने पर वे कहती हैं कि लता मंगेशकर होने की अपनी बहुत तकलीफें हैं। नंदी जी ने जब उनके दिल के सबसे करीब गाने को जानना चाहा तो उन्होंने 'महल' के 'आएगा आनेवाला' का नाम लिया। उन्हीं दिनों लता जी की बनाई फिल्म 'लेकिन' सामने आती है। पुनर्जन्म की बात करना, रहस्यमयी फिल्म 'महल' का गाना सबसे प्रिय होना और समय के संधिकाल में उलझी आत्मा की कहानी पर 'लेकिन' फिल्म का निर्माण, यह आध्यात्मिकता के बिना संभव नहीं है।

महान विभूतियों के जीवन से अनेक लोग प्रेरणा लेते हैं, उनसे भावनात्मक रूप से जुड़ाव महसूस करते हैं, उन्हें प्यार करते हैं और हृदय से उनका सम्मान करते हैं। ऐसी ही बेमिसाल शख्सियत लता मंगेशकर थीं। वे असाधारण प्रतिभा संपन्न गायिका थीं। आत्मा की पवित्रता उनके व्यक्तित्व से झलकती थी। धवल वस्त्र और हीरों के आभूषण उनकी उज्ज्वल, सादगीपूर्ण, चमकदार, मानसिक दृढ़ता और अनुपम जीवनशैली की परिचायक ही तो थे।

तीन दशक पहले पत्रकार प्रीतीश नंदी ने अपने शो में लता मंगेशकर से पूछा था कि वे अगले जन्म में क्या बनना चाहेंगी? लता जी ने कहा था कि वे फिर से जन्म नहीं लेना चाहतीं, फिर भी यदि उन्हें जन्म मिला तो वे लता मंगेशकर नहीं बनना चाहेंगी। 'ऐसा क्यों' पूछे जाने पर वे कहती हैं कि लता मंगेशकर होने की अपनी बहुत तकलीफें हैं। नंदी जी ने जब उनके दिल के सबसे करीब गाने को जानना चाहा तो उन्होंने 'महल' के 'आएगा आनेवाला' का नाम लिया। उन्हीं दिनों लता जी की बनाई फिल्म 'लेकिन' सामने आती है। पुनर्जन्म की बात करना, रहस्यमयी फिल्म 'महल' का गाना सबसे प्रिय होना और समय के संधिकाल में उलझी आत्मा की कहानी पर 'लेकिनज' फिल्म का निर्माण, यह आध्यात्मिकता के बिना संभव नहीं है। यूँ तो चार फ़िल्मों के निर्माता के रूप में लता जी का नाम आता है परन्तु 'लेकिन' उनका सबसे प्रभावशाली शाहकार है। 'लेकिन' ने न केवल प्रशंसा बटोरी बल्कि अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार भी जीते। गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर की कहानी 'क्षुधित पाषाण' पर आधारित 'लेकिन' का निर्देशन और गीत लेखन गुलजार ने किया था। हृदयनाथ मंगेशकर ने उत्कृष्ट संगीत दिया। 'लेकिन' ने पांच राष्ट्रीय पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ गीत, संगीत, गायन, कला निर्देशन और कॉस्ट्यूम डिजाइन का अवार्ड जीता था।

'लेकिन' रेवा नाम की लड़की की भटकती रूह की दास्तान है जो मृत्यु के उपरांत उसी कालखंड में फंसी हुई है। फिल्म का हीरो, सरकारी अधिकारी समीर, सालों पहले गुजर चुके जासोर के महाराजा परम सिंह की वीरान हवेली की वस्तुओं की सूची तैयार करने राजस्थान आता है। अपने काम के दौरान उसकी भेंट रहस्यमयी रेवा से होती है, जो वास्तव में एक आत्मा है और अपने उद्धार के लिए बेचैन है। रेवा के बार-बार सामने आने और गायब हो जाने से समीर को उसके रूह होने का विश्वास हो जाता है। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, महाराजा परम सिंह के व्यभिचार और अत्याचार की परतें खुलने लगती हैं। वह रेवा की आपबीती जानने के लिए उत्सुक हो जाता है। उसे पता चलता है कि रेवा जब छोटी बालिका थी, अपनी बड़ी बहन तारा और पिता के साथ हवेली में आई थी। तारा को महाराजा के सामने अपनी नृत्य और गायन कला का

प्रदर्शन करना था। तारा पर महाराजा की नीयत खराब हो जाती है। वह सभी को बंदी बना लेता है। संगीत के उस्ताद मिराज अली की मदद से वे रेगिस्तान से पार जाने के लिए ऊँटों पर बैठकर भाग जाते हैं। लेकिन रेवा और संगीत के उस्ताद को महाराजा के सैनिक पकड़कर जेल में डाल देते हैं। तारा और उनके पिता भागने में सफल हो जाते हैं परन्तु उनके विषय में किसी को कुछ पता नहीं होता। कारागार में आठ साल का समय बीतने के बाद रेवा युवावस्था को प्राप्त होती है। तब महाराजा की लंपटता से उसे बचाने के लिए मिराज अली अपने वफादार साथी मेहरू को पवित्र कुरान की कसम दिलाकर रेवा को रेगिस्तान से पार पहुँचाने के लिए तैयार करता है। वे भागते हैं। मेहरू जी जान लगाकर रेवा को रेगिस्तान पार कराते की कोशिश करता है लेकिन महाराजा के आदमी उसे पकड़ लेते हैं। रेवा भागते हुए रेत के तूफ़ान में फँसकर मर जाती है। मरने के बाद भी रेवा की आत्मा उस समय के खंड में फँस जाती है। उसे अपने उद्धारक की प्रतीक्षा है। मेहरू का पुनर्जन्म समीर है। समीर द्वारा रेवा की आत्मा को मुक्त कराने की दिलचस्प और मार्मिक कहानी है 'लेकिन'।

गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर, लता मंगेशकर, गुलजार, हृदयनाथ मंगेशकर, भानु अथैया, डिंपल कपाड़िया, विनोद खन्ना जैसे दिग्गज जिस फिल्म से जुड़े हों, उसकी उत्कृष्टता पर किसे संदेह हो सकता है? 'लेकिन' का निर्माण करना लता जी की श्रेष्ठ अभिरुचि का परिचायक है। सांसारिक उलझनों के जाल से मुक्ति के लिए मानवीय चेतना की व्यग्रता का दस्तावेज है 'लेकिन',। यह पावन अंतरात्मा समय और शरीर की सीमाओं को भेदकर अपने परमात्मा में विलीन हो जाना चाहती है।

लता जी के संपूर्ण गायन में मार्मिक दिव्यता झलकती है, मानों वाग्देवी उन्हें आशीर्वाद दे रही हों। उनके गाये भजन श्रोताओं को आध्यात्मिक शांति प्रदान करते हैं। उनके स्वर में इतनी करुणा और संवेदना है कि जब एक राष्ट्रीय समारोह में वे 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गा रही थीं तब मंच पर मौजूद अनेक लोगों के साथ भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की आँखें भी नम हो गई थीं। उन्होंने अपने लिए गुणवत्ता, नैतिकता, उत्कृष्टता के मानदंड तय किए थे। इसीलिए राजकपूर के अनुरोध को न टाल पाने के कारण 'मैं का करूँ राम मुझे बुड्ढा मिल गया' (फ़िल्म 'संगम') गाने का उन्हें सदा अफसोस रहा। सन् 1958 में उन्हें 'मधुमति' के गाने 'आ जा रे परदेसी' के लिए सर्वश्रेष्ठ गायिका का पुरस्कार दिया जाना था। उन्होंने यह अवार्ड लेने से मना कर दिया क्योंकि वे बिना वस्त्र के स्त्री की मूर्ति को हाथों में नहीं लेना चाहती थीं। तब, आयोजकों ने लता जी को फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार की ट्रॉफी कपड़े में लपेटकर दी थी। सन् 1969 में नयी प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए लता जी ने फ़िल्मफ़ेयर अवार्ड के लिए उनके नाम पर विचार न करने का आग्रह किया था। निस्पृहता और सिद्धांतों पर अडिग रहने का यह सुंदर उदाहरण है। पुरस्कार, रेकॉर्ड और सम्मान उनके पास पहुंचकर धन्य हो जाते थे।

सचमुच, महापुरुषों के व्यक्तित्व और व्यवहार ज्योति की भाँति सबका मार्गदर्शन किया करते हैं।